कक्षा–दशमी (10)
पाठ्यक्रमः
विषयः – संस्कृतम्

पूर्णांकाः 20

1. <u>रचनात्मकं कार्यम्</u> 5
   1) अनुवादः
   2) संवादलेखनम्
   3) अनुच्छेदलेखनम्
   4) चित्रवर्णनम्
   5) कथावबोधनम्

2. <u>व्याकरणम्</u> 5

क) सन्धिः

1) स्वरसंधिः – यण्, अयादि, पूर्वरूप
2) व्यंजनसंधिः – अनुनासिक, अनुस्वार, ष्टुत्व
3) विसर्गसन्धिः – उत्व, सत्वसन्धि, रुत्व, विसर्गलोपः

ख) <u>प्रत्ययाः</u>

कृदन्तप्रत्ययाः – क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर्

तद्धितप्रत्ययाः – त्व, तल्, टाप्, ङीप्

ग) विभक्तिप्रयोगः–

1) कारकविभक्तिः

2) उपपदविभक्तिः – द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी

घ) शब्दरूपाणि – उकारान्तः, ऋकारान्तः, (पुंल्लिङ्गशब्दाः),

ईकारान्तः, उकारान्तः (स्त्रीलिङ्गशब्दाः)

अस्मद्, युस्मद्, भवत्, तत् (सर्वनामशब्दाः)

ङ) <u>धातुरूपाणि</u>

पन्चलकारेषु प्रयोगः – लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्

धातवः – धाव्, कृ, दृश्, श्रु, गै, नृत्, भू, चल्, चर्, स्मृ, पत्,

च) अव्ययपदानि – अधुना, सदा, यदा–तदा, एकदा, कदा, इदानीम्, एवं, यथा–तथा, शीघ्रं, मन्दम्, मिथ्या, वृथा।

छ) संख्याज्ञानम् –1–100 पर्यन्तम्

3. **नैतिक–शिक्षा** **5**

1) प्रदत्तश्लोकानां मन्जूषाप्रदत्तशब्दैः अन्वयपूर्तिं भावार्थलेखनं च कुरुत–

- विद्या ददाति विनयं.........।
- पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः...........।
- अयं निजः परो वेति........।
- साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः.......।
- निन्दन्तु नीतिनिपुणाः।

4. **भारतीयज्ञानपरम्परा** **5**

क) वैदिकसाहित्यस्य परिचयात्मक–ज्ञानम्

1) वेद–वेदाङ्गानि 2) उपनिषदः दर्शनानि च

ख) लौकिकसाहित्यस्य परिचयात्मक–ज्ञानम्

1) पुराणानि

2) नीतिशतकम्

3) चाणक्यनीतिः

परिशिष्टम्

1 व्यावहारिकं संस्कृतम्

(क) **संस्कृते कुटुम्बसंबन्धिशब्दानां ज्ञानम्**
यथा–
मम पितुः नाम.............।
मम मातुः नाम ....।
मम भ्रातुः नाम ....।
मम भगिन्याः नाम ....।
मम पितामहस्य नाम ....।
मम पितामह्याः नाम ....।
मम मातामहस्य नाम ....।
............इत्यादयः।
(शिक्षकाः छात्रमाध्यमेन अस्य अभ्यासं कारयिष्यन्ति)

2 शब्दरूपाणां वाक्यप्रयोगः

3 धातुरूपाणां वाक्यप्रयोगः

पाठ्यपुस्तकम्

कक्षा–दशमी (10)

प्रार्थना

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम –मरातीयतो नि दधाति वेदः।

स नः पर्षदती दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधु दुरितात्याग्नि।

–ऋग्वेद (१ –७ –७ –१)

हे परब्रह्म ! आप सर्व उत्पन्न जगत के ज्ञाता हो ,जैसा विद्वान् कहते हैं आप सर्वत्र ,सबमे विद्यमान ,अनंत ज्ञानवान हैं , आपके लिए जितने भी सुन्दर, सोम ,गुण विशिष्ट आदि पदार्थ हैं हम आपको अर्पित करते हैं अर्थात धारण करते हैं । आपकी कृपा से जो धर्मात्माओं के विरोधी दुष्ट हैं वो भी दुष्टता छोड़ दें । जिस प्रकार से नाविक दुर्गम समुद्र से नौका को पार करा देता है उसी प्रकार आप हमारी सभी पीड़ाओं को हटाकर इस संसार में और मुक्ति में हमको परम सुख दीजिये।

O Supreme Brahma, You are the knower of all created worlds. As the learned say, You are omnipresent, in all, and possess infinite knowledge. We offer to you meaning we held onto you all the beautiful, divine, and virtuous things. By your grace, may even the wicked who oppose the righteous abandon their wickedness. Just as a sailor guides a boat across a treacherous sea, so may you remove all our suffering and grant us ultimate happiness, both in this world and in liberation.

"तेजो असि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। बलमसि बलम्मयि धेहि।

ओजो असि ओजो मयि धेहि। मन्युरसि मन्युं मयि धेहि!सहो असि सहो मयि धेहि।।

–(यजुर्वेद १६/६)

हे ईश्वर!", तुम कान्ति (प्रकाश, तेज) स्वरूप हो, मुझमें भी कान्ति धारण कराओ। तुम पराक्रम स्वरूप हो, मुझमें भी पराक्रम धारण कराओ। तुम बलशाली हो, मुझमें भी बल धारण कराओ। तुम सामर्थ्यवान्

/ओजस्वी हो, मुझमें भी सामर्थ्य/ओज,/प्राणबल धारण कराओ। तुम दुष्टों को भस्म करते हो, मुझे भी वह शक्ति दो। साथ ही तुम सहनशील हो, मुझे भी सहनशील बनाओ।

O God! You are the embodiment of radiance (light, brightness), bestow radiance upon me as well. You are the embodiment of might, bestow valor upon me as well. You are powerful, bestow strength upon me as well. You are capable/powerful, bestow strength/vigor/life force upon me as well. You destroy the wicked, give me that strength too! You are also tolerant, make me tolerant too!

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः।

तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।––ऋग्वेद – 1. 89. 4

अर्थ – वायुदेवता हमें सुखकारी औषधियाँ प्राप्त करायें। माता पृथ्वी और पिता स्वर्ग भी हमें सुखकारी औषधियाँ प्रदान करें। सोम का अभिषव करने वाले सुखदाता ग्रावा उस औषधरूप अदृष्ट को प्रकट करें। हे अश्विनी–कुमारो! आप दोनों सबके आधार हैं, हमारी प्रार्थना सुनिये।

May the wind god bless us with soothing medicines. May Mother Earth and Father Heaven also provide us with soothing medicines. May Graava, the one who anoints Soma with pleasure, reveal that unseen medicinal form. O Ashwini Kumaras, you both are the support of all, listen to our prayers.

तान् पूर्वयानिविदाहूमहे वयंभगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।

अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।––ऋग्वेद –1. 89.3

अर्थ – हम वेदरूप सनातन वाणी के द्वारा अच्युतरुप भग, मित्र, अदिति, प्रजापति, अर्यमण, वरुण, चन्द्रमा और अश्विनीकुमारों का आवाहन करते हैं। ऐश्वर्यमयी सरस्वती महावाणी हमें सब प्रकार का सुख प्रदान करें।

We invoke the eternal words of the Vedas, the infallible Bhagawan, Mitra, Aditi, Prajapati, Aryaman, Varuna, the Moon, and the Ashvins. May the majestic Saraswati, the great voice, grant us all kinds of happiness.

1.रचनात्मकं कार्यम्

1.अनुवादः

अनुवादः किसी भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दों में बदलने को अनुवाद कहते हैं। अनु = पश्चात् वद् – वाद =कहना । एक बात को फिर से कहना अर्थात एकबात को अन्य शब्दों में बदल करके कहना । इस यौगिक अर्थ के अनुसार अनुवाद एक भाषा से उसी भाषा में भी हो सकता है, परन्तु लोक व्यवहार में अनुवाद शब्द का योगरूढ अर्थ ही प्रसिद्ध है अर्थात् एक भाषा को दूसरी भाषा में बदलना । अनुवाद प्रणाली के वर्णन करने से पूर्व वाक्य में जो सुबन्त तिङन्त आदि शब्द रहते हैं उनका विवेचन करना, तथा कारकों का संक्षिप्त वर्णन यहां पर उचित होगा।

कारक –

कर्त्ता कर्म च करणं च, सम्प्रदानं तथैव च ।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ।।

'गोपालः पुस्तकं पठति' गोपाल पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य में पढ़ने वाला गोपाल है। "रामः रावणं हतवान् " राम ने रावण को मारा। इस वाक्य में मारने वाला राम है। पढ़ना (पठति) और मारना (हतवान्) ये दो क्रियाएं हैं। इन क्रियाओं को करने वाले गोपालः और रामः हैं। क्रिया को करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। अतः गोपाल और राम कर्त्ता हैं ।

प्रथम वाक्य में पढ़ने का विषय 'पुस्तक है और द्वितीय में मारने का विषय रावण है। पुस्तक और रावण के लिए ही कर्ताओं ने क्रियाएँ की। अतः मुख्यतः जिस चीज के लिए कर्ता क्रिया को करता है, उसे कर्म कहते हैं।

'राजा स्वहस्ताभ्यां ब्राह्मणाय धनम् अयच्छत्' राजा ने अपने हाथों से ब्राह्मण को धन दिया। इस वाक्य में दान क्रिया की पूर्ति हाथों से हुई है अतः हाथ करण कारक हुआ। इसी वाक्य में दोनों की क्रिया ब्राह्मण के लिए हुई है, अतः ब्राह्मण ' सम्प्रदान कारक हुआ।

"आम्रस्य वृक्षात् भूमौ फलानि पतन्ति" आम के पेड़ से भूमि पर फल गिरते हैं। इस वाक्य में वृक्ष से फल पृथक् हुए अतः वृक्ष' अपादान कारक हुआ। आम के वृक्ष से किसके वृक्ष से आम के, अतः आम सम्बन्ध हुआ । फल भूमि पर गिरे फल कहाँ गिरे भूमि पर अतः भूमि अधिकरण हुई ।

उपरिलिखित चार वाक्यों में पढ़ना, मारना, देना और 'गिरना' क्रियाओं के सम्पादन में जिन कर्त्ता कर्म आदि का उपयोग हुआ है, उन्हें कारक कहते हैं । कारक वह हैं जिसका उपयोग क्रिया की पूर्ति के लिए किया जाता है। अनेक विद्वानों ने सम्बन्ध को भी कारक माना है।

संस्कृत में अनुवाद के लिए कक्षा नवमी में पढ़े गये कारकों का पुनरभ्यास आवश्यक है। अतः सर्वप्रथम उनका अभ्यास करते हैं। प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक) के उदाहरण–

१. छात्रः पठति। छात्र पढ़ता है।

२. अजयः विद्यालयं गच्छति। अजय विद्यालय जाता है।

द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक) के उदाहरण–

१. छात्रः पाठं पठति। पाठ पढ़ता है।

२. जनकः फलानि आनयति। पिता फल लाता है।

तृतीया विभक्ति (करण कारक) के उदाहरण–

१. छात्रः कलमेन लेखं लिखति। छात्र कलम से लेख लिखता है।

२. अहं हस्ताभ्यां कार्यं करोमि। मैं हाथों से कार्य करता हूँ।

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक) के उदाहरण :–

१. छात्रः पठनाय उपविशति। छात्र पढ़ने के लिए बैठता है।

२. पिता पुत्राय फलं यच्छति। पिता पुत्र को फल देता है।

पंचमी विभक्ति (अपादान कारक) के उदाहरण :–

१. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

२. अश्वात् बालकः पतति। घोड़े से बालक गिरता है।

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध) के उदाहरण :–

१. रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्। राम दशरथ के पुत्र थे।

२. इदं पितुः/जनकस्य कार्यम् अस्ति। यह पिता का कार्य है।

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक) के उदाहरण :–

१. जले मीनाः तरन्ति। जल में मछलियाँ तैरती हैं।

२. बालः पात्रे दुग्धम् आनयति। बालक बर्तन में दूध लाता है।

विभक्ति, कारक और उनके चिह्न–

विभक्ति चिह्न			
क्रमांक	विभक्ति	कारक	चिह्न
१	प्रथमा विभक्ति	कर्त्ता कारक	ने या कुछ नहीं
२	द्वितीया विभक्ति	कर्म कारक	को
३	तृतीया विभक्ति	कारण कारक	ने, से, के द्वारा
४	चतुर्थी विभक्ति	सम्प्रदान कारक	के लिए
५	पंचमी विभक्ति	अपादान कारक	से (अलग होने में)
६	षष्ठी विभक्ति	सम्बन्ध कारक	का, के, की, रा, रे, री
७	सप्तमी विभक्ति	अधिकरण कारक	में, पर
८	सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. रसोइया खाना बनाता है।

२. अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।

३. विद्यालय का भवन सुन्दर है।

४. लता संस्कृत गीत गाती है।

५.	हमस सब दौड़ते हैं।

६.	तुम दो हंसते हो।

७.	वे सब गुरु को नमस्ते करते हैं।

८.	आकाश में बादल गर्जते हैं।

६.	कोयल मधुर गाती है।

१०.	वृक्ष से फल गिरते हैं।

अनुवाद–अभ्यासः–

क)–लट् लकारे

1–श्याम गाँव जाता है।

2– छात्र विद्यालय में पढ़ते हैं।

3– भारत में अनेक नदियाँ बहती हैं।

4– मैं प्रतिदिन गृहकार्य करता हूँ।

5– तुम सब हंसते हो !

6– वे सब कार्य करते हैं।

7– तुम दोनों दौड़ते हो ।

8–हम सब पुस्तक पढ़ते हैं।

ख) – लृटलकारे

1) मैं कल गॉव जाऊँगा।

2) तुम सब वहाँ नृत्य करोगे ।

3) मनोज विद्यालय में पढ़ेगा।

4) श्यामा केला खायेगी।

5) वसुधा भोजन करेगी।

ग) लङ्लकारे ––

1) हम सब गाँव गए।

2) तुम दोनों ने नदी में स्नान किया।

3) युधिष्ठिर राजा हुए।

4) अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र था ।

5)सुरेश तेज दौड़ा।

घ) लोट्लकारे–

1) कक्षा में शोर मत करो

2) श्याम बैठ जाओ।

3) नरेश पुस्तक पढ़ो।

4) भानु प्रतिदिन दौडो।

5) हम सब कक्षा में जाएं।

2– वाक्येषु रेखांकितपदं शुद्धं कुरुत

1) तौ पुस्तकं पठन्ति ।

2) नराः ग्रामं गच्छति।

3) यूयं दुग्धं पास्यन्ति ।

4) ऋषिः यज्ञं कुर्वन्ति ।

5)वयम् नगरं अगच्छत ।

3– पाँच लकारों में धातु रूप

लट्लकार	विधिलिङ्लकार	लोट्लकार	लृट्लकार	लङ् लकार
भवति (होना)	भवेत्	भवतु	भविष्यति	अभवत्
गच्छति (जाना)	गच्छेत्	गच्छतु	गमिष्यति	अगच्छत्
पठति (पढ़ना)	पठेत्	पठतु	पठिष्यति	अपठत्
खाद् (खाना)	खादेत्	खादतु	खादिष्यति	अखादत्
पिबति (पीना)	पिबेत्	पिबतु	पास्यति	अपिबत्
करोति (करना)	कुर्यात्	करोतु	करिष्यति	अकरोत्
वदति (बोलना)	वदेत्	वदतु	वदिष्यति	अवदत्
पश्यति (देखना)	पश्येत्	पश्यतु	पश्यति	अपश्यत्
स्मृति (याद करना)	स्मरेत्	स्मरतु	स्मरिष्यति	अस्मृत्
नमति (नमस्ते करना)	नमेत्	नमतु	नमिष्यति	अनमत्
जयति (जीतना)	अजयेत्	जयतु	जेष्यति	अजयत्
तिष्ठति (ठहरना)	तिष्ठेत्	तिष्ठतु	स्थास्यति	अतिष्ठत्
पचति (पकाना)	पचेत्	पचतु	पक्ष्यति	अपचत्
सीदति (दुखी होना)	सीदेत्	सीदतु	सत्स्थति	असीदत्
जिघ्रति (सूंघना)	जिघ्रेत्	जिघ्रतु	घ्रास्यति	अजिघ्रत्
कूजति (कूजना)	कूजेत्	कूजतु	कूजिष्यति	अकूजत्
कर्षति (खीचना, सेती करना)	कर्षेत्	कर्षतु	कर्ष्यति	अकर्षत्
खेलति (खेलना)	खेलेत्	खेलतु	खेलिष्यति	अखेलत्
लिखति (लिखना)	लिखेत्	लिखतु	लेखिष्यति	अलिखत्
त्यजति (छोड़ना)	त्यजेत्	त्यजतु	त्यक्ष्यति	अत्यजत्
जीवति (जीना)	जीवेत्	जीवतु	जीविष्यति	अजीवत्
ज्वलति (जलना)	ज्वलेत्	ज्वलतु	ज्वलिष्यति	अज्वलत्
तरति (तैरना)	तरेत्	तरतु	तरिष्यति	अतरत्
दशति (काटना)	अदशेत्	दशतु	दश्यति	अदशत्
दहति (जलाना)	दहेत्	दहतु	दक्ष्यति	अदहत्
यच्छति (देना)	यच्छेत्	यच्छतु	दास्यति	अयच्छत्
पूजयति (पूजा करना)	पूजयेत्	पूजयतु	पूजयिष्यति	अपूजयत्
भजति (सेवा करना)	भजेत्	भजतु	भजिष्यति	अभजत्
वसति (रहना)	वस्यात्		वत्स्यति	अवसत्
वहति (बहना)	वहेत्	वहतु	वक्ष्यति	अवहर्
इच्छति (चाहना)	इच्छेत्	इच्छतु	एच्छिष्यति	ऐच्छत्

2.संवाद–लेखनम्

(क) अधोलिखितं संवादं मञ्जूषाप्रदत्तशब्दैः पूरयत –

लता – उमे! प्रातःकाले एवं सज्जीभूय कुत्र गन्तुं सन्नद्धा?

उमा (i)—————————————————————।

लता :– विद्यालयम् अस्यां वेषभूषायाम् ? तव गणवेशः कुत्रास्ति?

उमा :–(ii) ———————————————————————।

लता :–अहा! संस्कृतकाव्यालि –स्पर्धा! बहुशोभनम् । स्पर्धा तव विद्यालये अथवा अपरस्मिन् विद्यालये वा?

उमा ––(iii)————————————————————।

लता – शोभनम् तवैव विद्यालये। दूरं गन्तुम् आवश्यकता नास्ति । स्पर्धा संगीतयन्त्रैः सह भविष्यति न वा ?

उमा (iv)—————————————————————————।

लता–– एतत्तु शोभनम् यत् विना वाद्ययन्त्रं गायनं नीरसं प्रतीयते । प्रस्तुतिः भव्या भवेत् मे शुभकामनाः ।

उमा (v)———————————————————————।

मञ्जूषा ––

धन्यवादः,
विद्यालयं गच्छामि ।
अद्य अहं काव्यालि–प्रतियोगितायां गच्छामि ।
वाद्ययन्त्रैःसह भविष्यति।
ममैव विद्यालये अस्ति ।

आचार्य – अद्य कः दिनांको वर्तते ?

शिष्यः– महोदय! (i) ——————————————।

आचार्यः– अद्य अक्टूबर–मासे तु गान्धिमहोदयस्य जन्मदिवसः अस्ति । अद्यैव तु अन्यस्य महाभागस्यापि जन्मदिवसः। सः कः महापुरुषः?

शिष्यः – महोदय! (ii) ––––––––––––––––––––––––––––।

आचार्यः – श्रीलालबहादुरशास्त्री तु द्वितीयः प्रधानमन्त्री आसीत् । तस्य घोषः कः आसीत् ?

शिष्यः (iii) ––––––––––––––––––––––––––––––––।

आचार्यः– अद्यतनीय–प्रधानमन्त्रिणा श्रीमोदी–महोदयेन तु तृतीयः घोषः कृतः – जयजवानः, जयकिसानः, जयविज्ञानः च । श्रीलालबहादुरः कीदृशः वस्त्रधारकः आसीत् ?

शिष्यः– (iv) ––––––––––––––––––––––––––––।

आचार्यः– खादीवस्त्राणि तु राष्ट्रीय– वेशभूषारूपेण ज्ञायन्ते। वर्तमानकाले खादीवस्त्राणां कः प्रचारं करोति ?

शिष्यः (i) –––––––––––––––––––––––––––––––––।

आचार्यः–शोभनम् उक्तम् यत् वर्तमाने तु अस्माकं प्रधानमन्त्री श्रीमोदीमहोदयः खादीवस्त्रधारकः दृश्यते ।

मञ्जूषा

1–वर्तमानकाले श्री मोदी महोदयः प्रचारं करोति ।
2– अक्तूबरमासस्य द्वितीयः दिवसः वर्तते ।
3– श्री लालबहादुरशास्त्री खादीवस्त्र– धारकः आसीत् ।
4– जय जवानः, जयकिसानः ।
5– सः लाल बहादुर शास्त्री आसीत्।

(ग) करुणा –अर्णव! कुतः प्राप्तम् इदं चित्रम् ?

अर्णवः (i)––––––––––––––––––––––––––।

करुणा– शिक्षकमहोदयः प्रदत्तवान् ? इदं कस्य महापुरुषस्य चित्रम् अस्ति ?

अर्णवः– (ii) ––––––––––––––––––––––––––––––––––।

करुणा – अहो ! आचार्यचाणक्यस्य अर्थशास्त्रम् अतीव प्रसिध्दम्। तेन अपरः अपि ग्रन्थः लेखितः?

अर्णवः– (iii) ––––––––––––––––––––––––––––––––––।

करुणा– आम् आम् स्मृतम्। अस्मिन् ग्रन्थे नीतिवचनानि लिखितानि। जानासि सः कस्य गुरुः आसीत्?

अर्णवः = (iv)––––––––––––––––––––––––।

करुणा – सम्यक् उक्तम् त्वया। उभौ मिलित्वा कं पराजितवन्तौ ?

अर्णवः (v) ––––––––––––––––––––––––––––––––––।

मञ्जूषा

1) तेन अपरः ग्रन्थः चाणक्यनीतिः लिखितः ।

2) चाणक्यः चन्द्रगुप्तमौर्यस्य गुरुः आसीत् ।

3) इदं चित्रं शिक्षकमहोदयात् आप्तम् ।

4) इदं चाणक्यस्य चित्रम् अस्ति ।

5) उभौ मिलित्वा धनानन्दं पराजितवन्तौ ।

3.अनुच्छेदलेखनम्

मञ्जूषायां प्रदत्त शब्दसहायतया अथवा स्वतन्त्ररूपेण पंचवाक्यानि संस्कृतेन रचयत–

(क) विषयः– **स्वच्छभारतम्"**

मञ्जूषा

प्रधानमन्त्री ,स्वच्छभारतम् ,वीथिः भवनानि,उद्घोषयत्, स्वच्छानि, इतस्ततः, सेवाकार्यम, क्षालयति, मार्जयति, स्वच्छता, सामूहिकम्, रोगाः, यत्र ,भवति न ।

1– प्रधानमन्त्री '**स्वच्छभारतम्** इति उद्घोषयत्।

२– अस्माभिः भवनानि वीथीः, सरणिम् च **स्वच्छानि** कर्त्तव्यानि ।

3– सामूहिकं स्वच्छताकार्यं **सेवाकार्यम्** अस्ति ।

4– **इतस्ततः** अवराणि मा क्षिपन्तु ।

5– यत्र स्वच्छता भवति तत्र **रोगाः** न भवन्ति ।

(ख) विषयः ––**गणतन्त्रदिवसः**

मञ्जूषा

गणानां तन्त्रं, कथ्यते, गणतन्त्रम्, 26तमे दिनांके, राष्ट्रपतिः, उत्सवः ध्वजारोहणम्, सेनापथसंचलनम कर्तव्यपथे विद्यालयेष मान्यते राष्ट्राय समर्पितम करोति प्रधानाचार्यः

1– गणतन्त्रदिवसः जनवरीमासस्य **26तमे दिनांके** मान्यते ।

2– गणानां तन्त्रं **गणतन्त्रम्** कथ्यते ।

3– राष्ट्रपतिः **कर्तव्यपथे** ध्वजारोहणं करोति ।

4– विद्यालयेषु प्रधानाचार्यः **ध्वजारोहणं** करोति ।

5– 1950 वर्षे 26 जनवरीदिनांके संविधानं राष्ट्राय **समर्पितम्** ।

(ग) विषयः– **विजयादशमी**

मञ्जूषा

रावणस्य, पुत्तलिकाः, सत्यस्य, असत्योपरि, रामस्य, पराक्रमम् , अद्भुतम्, शौर्यम्, श्रीलंकायाम्, पर्व, बालकाः विजयोद्योतकम्, बालकाः दहन्ति, दशहरा ,मेघनाद–कुम्भकर्णयोः ।

1– विजयादशमी' इति **पर्व** दशहरा 'नाम्ना अपि प्रसिद्धम् ।

२– अस्मिन्नेव दिवसे रामः **रावणस्य** वधम् अकरोत् ।

3– अद्यापि रावणस्य **मेघनाद– कुम्भकर्णयोः** पुत्तलिकाः जनाः दहन्ति।

4– रामस्य अद्भुतं **शौर्यम्** जनान् धर्मस्य रक्षायै प्रेरयति ।

5– इदं पर्व असत्यस्य उपरि **सत्यस्य** विजयं द्योतयति ।

अभ्यासः–

(घ) विषयः ––**मैट्रोयानम्**

मञ्जूषा

आनन्दप्रदम्, समये, प्रचलति ग्रीष्मे, शैत्यम्, न, अतिमहार्घम्, प्रत्येकस्थानस्य, यातायातस्य समसोपानयुक्तम्, सूचकम्, नेत्रयोः, सर्वत्र, स्वल्पसमयेन,गन्तव्यम्, प्राप्नुवन्ति।

1– दिल्ली नगरे, ...तीव्रतमं साधनं मैट्रोयानम् अस्ति ।

2– प्रतिदिनं मैट्रोयानं .... प्रचलति ।

3– अस्मिन् मैट्रोयाने ग्रीष्मे.............., शीते च ऊष्णता अनुभूयते।

4– पथिकाः .... गन्तव्यं प्राप्नुवन्ति ।

5– रेलस्थानकेषु.........................स्वच्छता दृश्यते ।

4.चित्र–वर्णनम्

1. प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषा–प्रदत्तशब्दानां सहायताया पञ्चवाक्यानि संस्कृतेन रचयत–

मञ्जूषा

आनन्दम्, प्राप्नुवन्ति, समुद्रतटस्य, पति–पत्नी, वृक्षाः, स्त्रियः, पुरुषाः, वार्तालापं, कुर्वन्ति, बहवः, जनाः, क्रडन्ति, खादन्ति, पिबन्ति, भूमौ, आतपसेवनं, विश्रामम्, उपविष्टाः, शयानाः, केचन

1. इदं चित्र समुद्रतटस्य अस्ति।
2. अत्र बहवः स्त्रियः पुरुषाः उपविष्टाः सन्ति।
3. अत्र अनेके जनाः आतपे शयानाः सन्ति।
4. केचन जनाः शीतपेयं पिबन्ति।
5. अत्र जनाः आनन्दं प्राप्नुवन्ति।

2. प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पन्च वाक्यानि संस्कृतेन लिखत–

मञ्जूषा

गुरुकुलस्य, अस्ति, चित्रम्, शिष्याः, शशकः, कुटीरम्, गुरुः, उपविष्टाः, पाठयति, हरिणः, खगाः, वृक्षे, उपविष्टः, वृक्षाः, पुष्पाणि, छायायाम्, शिष्यान्, दृश्यते, भूमौ।

1. इदं चित्रं गुरुकुलस्य अस्ति।
2. अत्र एकं कुटीरम् अस्ति।
3. गुरुः शिष्यान् पाठयति।
4. अत्र एकः हरिणः दृश्यते।
5. शिष्याः भूमौ उपविष्टाः सन्ति।

3. प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्चवाक्यानि संस्कृतेन रचयत–

मञ्जूषा

मैट्रोस्थलस्य, चित्रं, मैट्रोरेलम्, विद्युच्चालितम्, तीव्रगामियानम्, वातानुकुलितम्, सुखकरी, यात्रा, भवति, गौरवम्, अस्माकम्, स्वच्छता, दृश्यते, सम्पूर्णे, भारते, प्रसरति, अंस्मिन्, याने।

1. इदं चित्रं मैट्रोस्थलस्य अस्ति।
2. इदं मैट्रोरेलम् तीव्रगामियानम् अस्ति।
3. इदं यानं वातानुकूलितम् अस्ति।
4. अस्मिन् याने यात्रा सुखकरी भवति।
5. मैट्रोरेलम् अस्माकं गौरवम् अस्ति।

4. प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्चवाक्यानि संस्कृतेन रचयत–

मञ्जूषा

आरक्षकौ, दण्डशुल्कम्, प्राप्नोति, शिरस्त्राणं, विना, चलति, मोटरसाइकिलचालकात्, वृक्षौ, द्वौ, स्तः, सुरक्षायै, आवश्यकम्, दुर्घटनाः, भवन्ति, अनेकाः

1. द्वौ आरक्षकौ मोटरसाइकिल–चालकात् दण्डशुल्कं प्राप्नुतः।

2. अत्र द्वौ वृक्षौ स्तः।

3. शिरस्त्राणं सुरक्षायै आवश्यकम् भवति।

4. मार्गे अनेकाः दुर्घटनाः भवन्ति।

5. अत्र एकः चालकः मोटरसाइकिलं चालयति।

5.कथावबोधनम्

1. मञ्जूषा–प्रदत्तशब्दानां सहायतया अधोलिखितां कथां पूरयित्वा कथां पुनः लिखत –

महर्षिः भारद्वाजः सर्वदा अध्ययने दत्तचित्तः आश्रमे अतीवश्रमेण (i)–––––––पाठयति स्म । सः वृद्धः जातः । एकस्मिन् दिने (ii) –––––––आगत्य महर्षिम् अवदत् –"भवान् लोकोपकारी , अतः अहं भवन्तं पुनः (iii)–––––––––करोमि ।" पुनः शतं वर्षाणि जीवतु । महार्षः पूर्वापेक्षया (iv) ––––––––– अध्ययनं कृत्वा अधिकनिष्ठया शिष्यान् (v)–––––––––। भगवान् पुनः आगत्य अपृच्छत्– 'पुनः 'युवा' इति करोमि चेत् किं करिष्यति ? महर्षिः अवदत् –पुनः अधीत्य ज्ञानस्य सम्प्रेषणं (vi)––––––––––––करिष्यामि। भगवान् अपृच्छत्– किं विवाहादिकं (vii)––––––––––– सुखादिकं नेच्छति भवान् ? महर्षिः अवदत् –(viii)––––––!

अध्ययनात् अध्यापनात् च अधिकः आनन्दः (x)––––––––––?" भगवान् उवाच– 'धन्यः भवान् ।(xi) –––––––––––– भारतीया संस्कृतिः!

मञ्जूषा

भगवन् ,शिष्येभ्यः, शिष्यान्, युवा, कुतः, अधिकाधिकं, कृत्वा, भगवान्, अध्यापितवान्, धन्या ।

2. एकदा एकः राजा धनपूर्णं (i)––––––––––सेवकाय अवदत् – गच्छ , एतद् धनं साधुषु (ii)–––––––– आगच्छ। सेवकः सर्वत्र अभ्रमत्, बहून् साधून् मिलित्वा धनं दातुं प्रयत्नम् अकरोत् परन्तु कोऽपि साधुः तस्मिन् रुचिं न (iii)––––––––––। सेवकं परितः (iv)–––––––––– अन्ये जनाः एकत्रिताः अभवन्। ते सर्वे सेवकं धनं दातुं (v)––––––––––। सेवकः अवदत् – एतद् धनं साधुषु एव वितरितुम् इच्छति। (vi)––––––––राजा। यदि केभ्यश्चित्

अन्येभ्यः ददामि तर्हि राजा (vii) –––––––––––––भविष्यति इति। (viii)––––––– सः स्यूतं राज्ञः समीपे आनयत् अवदत् च राजन्! ये साधवः सन्ति ते धनं इच्छन्ति ते (ix).––––––––– न सन्ति । इदानीं कः आदेशः ? राजा तेन धनेन साधुभ्यः (x)–––––––– व्यवस्थाम् अकारयत् ।

मञ्जूषा

वितीर्य, परितः, अस्माकम्, आश्रमाणाम्, स्यूतम्, प्रदर्शितवान्, प्रार्थितवन्तः, अन्ततः क्रुद्धः, साधवः।

3. वसन्तर्तुः ऋतुः (i) ——————————कथ्यते । (ii)————————— अयं (iii)—————————ऋतुराज–वसन्तनाम्ना (iv)——————————। प्र–तिः ऋतुराजवसन्तस्य (v)——————————— अभिनंदनं स्वागतं (vi)———————————— करोति । वसन्तः प्रकृतिकामिन्याः (vii)—————————— करोति । वस्तुतः वसन्तः प्रकृतेः (viii)————————— अस्ति । यतः अस्य ऋतोः (ix)—————————प्रकृतिः(x)—————————— जायते।

मञ्जूषा

हार्दिकम, च, शृंगारम्, ऋतुः आगमनेनैव, राजा, प्रफुल्लिता, तारुण्यम्, अत एव, आकार्यते ।

4. पुरा दक्षिणभारते (i)——————————— एकः विशालः वृक्षः आसीत्। तत्र (ii)—————————नीडानि आसन् येषु खगाः स्वशिशुभिः (iii)——————————— सुखेन कालं यापयन्ति स्म। (iv)————————— तत्र महती वृष्टि : (v)——————————— । सर्वे पशव : स्वप्राणानां रक्षायै इतस्ततः (vi)————————————।तदा शीतेन कम्पमानः कश्चन् (vii)—————————तत्र आगच्छत् । तस्य तां दशां विलोक्य (viii)———————————— वानरम् अवदन् – (ix) —————————— वानर! मानवस्य इव ते अपि हस्तौ पादौ च सन्ति । त्वमपि (x)——————————— निर्माणं कृत्वा सुखेन कालं यापय, कष्टस्य अनुभवं मा कुरु ।

मञ्जूषा

गृहस्य, नर्मदातटे, भो!, अनेकानि, खगाः, सह, वानरः एकदा, 'अधावन्, संजाता।

5. कस्मिंश्चित् (i) एक. सिंहः वसति स्म । एकदा सः (ii)—————————— अधः सुप्तः आसीत् । तदा एकः (iii)—————————— तत्र आगत्य तस्य उपरि अकूर्दत्, येन सिंहस्य (iv).————————————भग्ना। क्रुद्धः सिंहः तं मारयितुम् उद्यतः जातः । तदा (v) ——————————— मूषकः अवदत् "भो (Vi) ———————————— मयि दयां कुरु। उचितसमये अहं तव (vii) ——————————— करिष्यामि।अहसत् परं (viii) ——————————— मूषकम् अमुञ्चत् । दैववशात् एकदा सिंहः (ix)———————————— प्रसारिते जाले निबद्धः । तदा सः मूषकः तत्रागत्य स्वतीक्ष्णदन्तैः जालस्य कर्तनम् अकरोत् ।

मञ्जूषा

व्याधैः, वने, तम्, वृक्षस्य, श्रुत्वा, निद्रा, सहायताम्, कृन्दन् वनराज! मूषकः स

6. एकदा एकः (i) ––– स्वकीये वने सर्वान् मृगान् (ii)–– आदिशत्– अहम् अस्य अरण्यस्य राजा अस्मि, अतः श्वः प्रभृतिः (iii)– –––एकः मृगः स्वयं मम आहारार्थम् (iv) ––– । भीताः मृगाः तथैव समाचरन्। एकदा कस्यचित् शशकस्य (v) –– समागतः । सः सिंहं पराजितुं कर्तुं व्यचारयत् । भीतभीत इव (vi) ––सिंहं निकषा प्राप्तवान् । कुपितः सिंहः पृष्टवान् कथं विलम्बेन समागतोऽसि ? शशकः प्रत्यवदत् – मार्गे एकोऽपरः सिंहो मां रोद्धुं प्रायतत, परं कथञ्चित् (vii)–– तत् श्रुत्वा वनराजः ते हन्तुम् (viii)––शशकेन निर्दिष्टस्य (ix)–– मध्ये च स्वप्रतिविम्बं दृष्ट्वा अगर्जत्, कूपमध्ये च (x) ––– । ततः प्रभृतिः सर्वे वनचराः सानन्दं तत्र व्यचरन् ।

मञ्जूषा

वारः, समागतः, पतितवान् , आगच्छतु, वनराजः, युष्मासु, विलम्बेन, कूपस्य, ऐच्छत् , आहूय।

5. **समुचितं मेलयत –**

(1)	विद्या ददाति विनयम्	(क)	धनाद्धर्मं ततः सुखम्।।
(2)	नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः	(ख)	वसुधैव कुटुम्बकम्।
(3)	उदारचरितानां तु	(ग)	लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेच्छम्।
(4)	तृणं न खादन्नपि जीवमानः	(घ)	विनयाद् याति पात्रताम्।
(5)	निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु	(ङ)	परोपकाराय सतां विभूतयः।
(6)	पात्रत्वाद्धनमाप्नोति	(क)	तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।

2.व्याकरणम्

(क) सन्धिः

यण् सन्धिः– 'इको यणचि' यह यण् संधि का प्रमुख सूत्र है। इसके अनुसार – इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ वर्ण के बाद कोई भिन्न स्वर (अ–औ) तक आए तो इ/ई के 'य्' उ/ऊ को व्, ऋ/ॠ को 'र्' तथा 'लृ' को 'ल्' हो जाता है।

इ/ई	उ/ऊ	ऋ/ॠ	लृ	– भिन्न स्वर (अ औ) परे होने पर
र्	व्	र्	ल्	

उदाहरणानि–

प्रति + एकम् = प्रत्येकम् सु + आगतम् = स्वागतम्

इति + आदि = इत्यादि वधू + आज्ञा = वध्वाज्ञा

देवी + उवाच = देव्युवाच भानु + आदयः= भान्वादयः

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा लृ + आकृतिः = लाकृतिः

अयादि–सन्धिः– 'एचोऽयवायावः' यह अयादि सन्धि का प्रमुख सूत्र है। इसके अनुसार– यदि 'ए, ऐ, ओ, औ' के बाद कोई भी स्वर हो, तो उन्हें क्रमशः 'अय्, आय्, अव् और आव्' आदेश हो जाता है।

ए	ऐ	ओ	औ	– स्वर परे होने पर
↓	↓	↓	↓	
अय्	आय्	अव्	आव्	

उदाहरणानि–

ने + अनम् = नयनम् पो + अनः = पवनः

हरे + ए = हरये | विष्णो + ए = विष्णवे

नै + अकः = नायकः | भौ + उकः = भावुकः

गै + अकः = गायकः | वागर्थौ + इव = वागर्थाविव

<u>पूर्वरूपसन्धिः–</u> इस सन्धि का प्रमुख सूत्र है– 'एङः पदान्तादति' पदांत ए और ओ के बाद 'अ' (ह्रस्व) हो तो तो 'अ' के स्थान पर ऽ (अवग्रह) हो जाता है। इस ह्रस्व 'अ' को पूर्वरूप हो जाता है इसका उच्चारण नहीं किया जाता।

ए और ओ – अ (ह्रस्व) = ऽ (अवग्रह)

को + अपि = कोऽपि | वने + अत्र = वनेऽत्र

हिमालयो + अस्ति= हिमालयोऽस्ति | के + अपि= केऽपि

नमो + अस्तु = नमोऽस्तु

अनुनासिक सन्धिः

पदान्त य ँ(ह के अतिरिक्त सभी व्यञ्जनों) के बाद यदि अनुनासिक (वर्ग का पंचम अक्षर) हो तो य ँवर्ण को अपने वर्ग का पंचम वर्ण हो जाएगा। यह नियम इच्छा पर निर्भर रहता है।

उदाहरणानि–

एतद् + मुरारिः= एतन्मुरारिः

दिक्+ नागः= दिङ्नागः

सद् + मतिः = सन्मतिः

तत् + न = तन्न

•**(प्रत्यये भाषायां नित्यम् वा०)** प्रत्यय के 'म' आदि के बाद में होने पर यह नियम ऐच्छिक नहीं होगा, अपि तु नित्य होगा।

उदाहरणानि–

तत् + मयम् = तन्मयम्

वाक् + मयम् = वाङ्मयम्

अनुस्वार–सन्धिः

1. पद के अंत में हलन्त 'म्' के बाद व्यञ्जन आने पर 'म्' को अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरणानि–

पाठम् पठति – पाठं पठति

विद्यालयम् गच्छति – विद्यालयं गच्छति

2. अपदान्त न् और म् को अनुस्वार हो जाता है यदि उसके बाद वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण (झल् वर्ण)हों।

उदाहरणानि

वासान् + सि = वासांसि,

मनान् + सि = मनांसि

ष्टुत्व सन्धिः

"ष्टुना ष्टुः" यह ष्टुत्व संधि का प्रमुख सूत्र है।

स् या तवर्ग से पहले या बाद में ष् या टवर्ग कोई भी वर्ण हो तो स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग होता है।

उदाहरणानि–

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

रामस् + टीकते = रामष्टीकते

उद् + डीनः = उड्डीनः

दुष् + तः = दुष्टः

कृष् + नः = कृष्णः

तत् + टीका = तट्टीका

(ख) प्रत्ययाः

(भूतकालिक) **कृदन्तप्रत्यया:**

भूतकाल के कृत् प्रत्यय मुख्यतः दो हैं–क्त (त), क्तवतु (तवत्)। इन दोनों प्रत्ययों का नाम 'निष्ठा' भी है। निष्ठा का अर्थ है 'समाप्ति'। कार्य और कार्य की समाप्ति के सूचक हैं। 'तेन हसितम्' का अर्थ हुआ कि हँसने का कार्य समाप्त हो गया, इसी प्रकार 'स पुस्तकं पतितवान्' का अर्थ हुआ कि उसने पुस्तक–पढ़ली'।

क्त और कतवतु प्रत्ययंत शब्दों के रूप में त्रि लिगों और सातों विभक्तियों में विशेष के अनुसार चलते हैं।

(क) क्त–प्रत्ययः

भूतकाल को अर्थ में धातु के साथ 'क्त' प्रत्यय लगता है। 'क्त' प्रत्यय का 'त' शेष रहता है। इसका प्रयोग कर्मवाच्य तथा भाववाच्य होता है।

'वत' प्रत्यय लगने पर कुछ धातुओं (सेट) में 'इ' लगता है। जैसे–पठ् इतः–पठितः कुछ धातुओं में (अनिट्) 'इ' नहीं लगता, जैसे–श्रुतः, श्रुगतः

'क्त' प्रत्यय के बाद शब्द अकारान्त बन जाता है। इसके रूप पुल्लिङ्ग में 'राम' के समान नपुंसकलिङ्ग में फल के समान और स्त्रीलिङ्ग में 'लता' के समान चलते हैं।

'क्त' प्रत्यय सेट धातुओं में; जैसे–

पुल्लिङ्ग			
पठ्	पठितः	पठितौ	पठिताः
हस्	हसितः	हसितौ	हसिताः
धाव्	धावितः	धावितौ	धाविताः
खाद्	खादितः	खादितौ	खादिताः
गम्	गतः	गतौ	गताः
त्यज्	त्यक्तः	त्यक्तौ	त्यक्ताः
पा	पीतः	पीतौ	पीताः
दा	दत्तः	दत्तौ	दत्ताः
स्था	स्थितः	स्थितौ	स्थिताः
कृ	कृतः	कृतौ	कृताः
हृ	हृतः	हृतौ	हृताः
दृश्	दृष्टः	दृष्टौ	दृष्टाः

स्त्रीलिंग् में रूप लता के समान; जैसे–

पठ्	पठिता	पठिते	पठिताः

हस्	हसिता	हसिते	हसिताः

नपुंसकलिंग् में फल के समान; जैसे–

पठ्	पठितम्	पठिते	पठितानि
हस्	हसितम्	हसिते	हसितानि

क्तवतु–प्रत्ययः

क्तवतु–प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल के अर्थ में होता है। क्तवतु–प्रत्यय में धातु के साथ 'तवत्' शेष रहता है–

(पठ्+क्तवतु पठितवत्) क्तवतु प्रत्यय लगाने के बाद वह शब्द बन जाता है। उसके शब्दरूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

पुंल्लिङ्ग में भगवत् के समान

स्त्रीलिङ्ग में नदी के समान

नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान

- कुछ धातुओं में धातु और प्रत्यय के बीच 'ई' लगता है उन्हें सेट् (इट् सहित) कहते हैं; जैसे–

सेट् धातु	पुल्लिङ्ग (एक.)		सेट् धातु	पुंल्लिङ्ग (एक.)	
पठ्	पठितवत्	पठितवान्	हस्	हसितवत्	हसितवान्
धाव्	धावितवत्	धावितवान्	खाद्	खादितवत्	खादितवान्
पत्	पतितवत्	पतितवान्	वद्	उदितवत्	उदितवान्
सव्	सेवितवत्	सेवितवान्	कथ्	कथितवत्	कथितवान्
चिन्त्	चिन्तितवत्	चिन्तितवान्			

- कुछ धातुओं (अनिट्) में 'ई' नहीं लगता उन्हें अनिट् (इट् रहित) कहते हैं; जैसे–

गम्	गतवत्	गतवान्	कृ	कृतवत्	कृतवान्
स्मृ	स्मृतवत्	स्मृतवान्	श्रु	श्रुतवत्	श्रुतवान्
पि	पीतवत्	पीतवान्	दा	दत्तवत्	दत्तवान्

स्था	स्थितवत्	स्थितवान्	दृश्	दृष्टवत्	दृष्टवान्
प्रच्छ्	पृष्टवत्	पृष्टवान्	त्यज्	त्यक्तवत्	त्यक्तवान्
थ्ज	जितवत्	जितवान्	नी	नीतवत्	नीतवान्
पच्	पक्ववत्	पक्ववान्	ह्व	ह्वतवत्	ह्वतवान्

क्तवतु प्रत्यय के प्रयोग को जानें–

हम भूतकाल में लङ् लकार का प्रयोग करते हैं, उसी अर्थ में 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में किया जाता है। लङ् लकार के क्रिया के स्थान पर क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग कर सकते हैं। पुल्लिङ्ग कर्ता होने पर क्तवतु का पुल्लिङ्ग रूप, स्त्रीलिङ्ग कर्ता होने पर क्तवतु का स्त्रीलिङ्ग रूप और नपुंसकलिङ्ग कर्ता होने पर क्तवतु का नपुंसकलिङ्ग का रूप प्रयुक्त होता है। इसी तरह इसका तीनों वचनों में भी प्रयोग होता है।

(च) **तव्यत्–प्रत्ययः**

धातुओं में 'चाहिए' अर्थ में 'तव्यत्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। इसमें अंतिम 'त' का लोप हो जाता है और 'तव्य' शेष बचता है। इस प्रत्यय का प्रयोग भी भाव तथा कर्म के अर्थ में होता है तथा इनके रूप तीनों लिंगों में भिन्न–भिन्न होते हैं।

- तव्यत् प्रत्यय लगाते समय कुछ धातुओं में 'इ' लगता। वे धातुएँ सेट् कहलाती हैं। कुछ धातुओं में 'इ' नहीं लगता। उन्हें अनिट् कहते हैं।
- कर्मवाच्य में प्रयोग करने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है। क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है।
- अकर्मक धातु में तव्यत् युक्त क्रिया प्रथमा विभक्ति, नपुंसकलिङ्ग, एकवचन में ही होती है।
- तव्यत् प्रत्यय से बने क्रियापदों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।
- पुल्लिङ्ग में राम के समान पठितव्यः, पठितव्यौ, पठितव्याः
- स्त्रीलिङ्ग में रमा के समान पठितव्या, पठितव्ये, पठितव्याः
- नपुंसकलिङ्ग में फल के समान पठितव्यम्, पठितव्ये, पठितव्यानि

क्र.सं.	धातु+तव्यत्=मूलशब्द	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	अर्थ
1	पठ् + तव्यत् = पठितव्य	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्	पढ़ना चाहिए
2	खाद् + तव्यत् = खादितव्य	खादितव्यः	खादितव्या	खादितव्यम्	खाना चाहिए
3	लभ् + तव्यत् = लब्धव्य	लब्धव्यः	लब्धव्या्	लब्धव्यम्	प्राप्त होना चाहिए
4	भ्रम् + तव्यत् = भ्रमितव्य	भ्रमितव्यः	भ्रमितव्या	भ्रमितव्यम्	घूमना चाहिए
5	लिख् + तव्यत् = लिखितव्य	लिखितव्यः	लिखितव्या	लिखितव्यम्	लिखना चाहिए
6	गम् + तव्यत् = गन्तव्य	गन्तव्यः	गन्तव्या	गन्तव्यम्	जाना चाहिए
7	गै + तव्यत् = गातव्य	गातव्यः	गातव्या	गातव्यम्	गाना चाहिए
8	कृ + तव्यत् = कर्त्तव्य	कर्त्तव्यः	कर्त्तव्या	कर्त्तव्यम्	करना चाहिए
9	दा + तव्यत् = दातव्य	दातव्यः	दातव्या	दातव्यम्	देना चाहिए
10	ज्ञा + तव्यत् = ज्ञातव्य	ज्ञातव्यः	ज्ञातव्या	ज्ञातव्यम्	जानना चाहिए
11	नी + तव्यत् = नेतव्य	नेतव्यः	नेतव्या	नेतव्यम्	ले जाना चाहिए
12	वच् + तव्यत् = वक्तव्य	वक्तव्यः	वक्तव्या	वक्तव्यम्	बोलाना चाहिए
13	हन् + तव्यत् = हन्तव्य	हन्तव्यः	हन्तव्या	हन्तव्यम्	मारना चाहिए
14	सह् + तव्यत् = सोढव्य	सोढव्यः	सोढव्या	सोढव्यम्	सहना चाहिए
15	वह् + तव्यत् = वोढव्य	वोढव्यः	वोढव्या	वोढव्यम्	ढोना चाहिए
16	स्मृ + तव्यत् = स्मर्तव्य	स्मर्तव्यः	स्मर्तव्या	स्मर्तव्यम्	याद करना चाहिए
17	श्रु + तव्यत् = श्रोतव्य	श्रोतव्यः	श्रोतव्या	श्रोतव्यम्	सुनना चाहिए
18	दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्यः	द्रष्टव्यः	द्रष्टव्या	द्रष्टव्यम्	देखना चाहिए
19	प्रच्छ् + तव्यत् = प्रष्टव्य	प्रष्टव्यः	प्रष्टव्या	प्रष्टव्यम्	पूछना चाहिए

अनीयर्–प्रत्ययः

अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग भी 'चाहिए' और 'योग्य' अर्थ में होता है। अनीयर्–प्रत्यय का 'अनीय' शेष बचता है। इसका प्रयोग भी कर्म और भाव में होता है। कर्मचाच्य में प्रयोग करने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है। क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है।

अकर्मक धातुओं में क्रिया प्रथमा विभक्ति, नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होती है।

विशेषण के समान भी इसका प्रयोग होता है। यथा–पठनीय कविता, दर्शनीयम् स्थलम्

अनीयर् प्रत्यय और धातु के बीच 'इ' नहीं लगता।

यथा पठ्+अनीयर् पठनीय, क्रीड् + अनीयर् क्रीडनीय। अनीयर् प्रत्यय से बने शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

लिङ्गम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
पुंल्लिङ्गम्	पठनीयः विषयः	पठनीयौ विषयौ	पठनीयाः विषयाः
स्त्रीलिङ्गम्	पठनीया पत्रिका	पठनीये पत्रिके	पठनीयाः पत्रिकाः
न्पुंसकलिङ्गम्	करणीयं कार्यम्	करणीये कार्ये	करणीयानि कार्याणि

अब, कुछ धातुओं के साथ 'अनीयर्' प्रत्यय जोड़कर पद निर्माण करते हैं–

क्र. सं.	धातु + अनीयर् = मूल शब्द	पुंल्लिंग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद	अर्थ
1	पठ् + अनीयर् = पठनीय	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्	पढ़ने योग्य
2	गम् + अनीयर् = गमनीय	गमनीयः	गमनीया	गमनीयम्	जाने योग्य
3	रम् + अनीयर् = रमणीय	रमणीयः	रमणीया	रमणीयम्	घूमने योग्य
4	याच् + अनीयर् = याचनीय	याचनीयः	याचनीया	याचनीयम्	माँगने योग्य
5	स्मृ + अनीयर् = स्मरणीय	स्मरणीयः	स्मरणीया	स्मरणीयम्	याद करने योग्य
6	दा + अनीयर् = दानीय	दानीयः	दानीया	दानीयम्	देने योग्य
7	खाद् + अनीयर् = खादनीय	खादनीयः	खादनीया	खादनीयम्	खाने योग्य
8	दण्ड् + अनीयर् = दण्डनीय	दण्डनीयः	दण्डनीया	दण्डनीयम्	दण्ड देने योग्य
9	कृ + अनीयर् = करणीय	करणीयः	करणीया	करणीयम्	करने योग्य
10	क्री + अनीयर् = क्रयणीय	क्रयणीयः	क्रयणीया	क्रयणीयम्	खरीदने योग्य
11	तुल् + अनीयर् = तोलनीय	तोलनीयः	तोलनीया	तोलनीयम्	तोलने योग्य

12	जि + अनीयर् = जयनीय	जयनीयः	जयनीया	जयनीयम्	जीतने योग्य
13	तड् + अनीयर् = ताडनीय	ताडनीयः	ताडनीया	ताडनीयम्	पीटने योग्य
14	श्रु + अनीयर् = श्रवणीय	श्रवणीयः	श्रवणीया	श्रवणीयम्	सुनने योग्य
15	लिख् + अनीयर् = लेखनीय	लेखनीयः	लेखनीया	लेखनीयम्	लिखने योग्य
16	सह् + अनीयर् = सहनीय	सहनीयः	सहनीया	सहनीयम्	सहने योग्य

(ग) विभक्ति–प्रयोगः

1) कारकविभक्तिः

"क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्" क्रिया का अनुगमन करने वाले कारक कहलाते हैं। अर्थात् जिनका क्रिया से संबंध होता है। जैसे–बालकः पठति।

'बालकः' पद का 'पठति' क्रिया के साथ संबंध है। अतः बालकः पद कारक है।

संस्कृत में सात कारक होते हैं। कारकों को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों या प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, वे विभक्ति कहलाते हैं। विभक्तियाँ सात होती हैं। कारक को प्रकट करने के लिए संबोधन में एकवचन को छोड़कर शेष प्रथमा विभक्ति जैसा ही रूप होता है। कारक की विभक्तियाँ एवं उनके चिह्न निम्नलिखित हैं–

विभक्तिः	कारकः	चिह्नम्
प्रथमा	कर्ता (Nominative case)	ने/0
द्वितीया	कर्म (Accusative case)	को/0
तृतीया	करण (Instrumental case)	से/के द्वारा
चतुर्थी	संप्रदान (Dative case)	के लिए
पंचमी	अपादान (Ablative case)	से पृथक् (अलगाव) अर्थ में
षष्ठी	संबंध (Genitive case)	का/की/के/रा/री/रे
सप्तमी	अधिकरण (Locative case)	में/ऊपर/पर
––	संबोधन (Vocative case)	हे/अरे/भो

1. कर्ता कारक–

क्रिया को करने वाला कारक कर्ता होता है। कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

बालकः पठति।

बालकौ पठतः ।

बालकाः पठन्ति ।

संस्कृत में तीन पुरुष–प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष होते हैं। अतः कर्ता के पुरुषों के अनुसार क्रिया का प्रयोग करना चाहिए।

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	सैनिकः देशं रक्षति।	सैनिकौ भ्रमतः।	सैनिकाः भ्रमन्ति।
	सः देशं रक्षति।	तौ भ्रमतः।	ते भ्रमन्ति।
	महिला पचति।	महिले पचतः।	महिलाः पचन्ति।
	सा पचति।	ते पचतः	ताः पचन्ति।
मध्यमपुरुष	त्वं पठसि।	युवां पठथः।	यूयं पठथ।
उत्तमपुरुष	अहं गच्छामि।	आवां गच्छावः।	वयं गच्छामः।

2. कर्म कारक– जिन शब्दों पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति) कहते हैं। कर्म कारकं में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

छात्रः पुस्तकं पठति ।

वानरः फलानि खादति ।

बालिकाः लेखान् लिखन्ति ।

इन वाक्यों में '**पुस्तकं**, **फलानि** तथा **लेखान्** कर्म कारक हैं क्योंकि इन पर क्रिया का प्रभाव पड़ रहा है। अतः इनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

3. करण कारक– कर्ता जिस साधन के द्वारा क्रिया करता है (अर्थात् जो क्रिया करने में सबसे ज्यादा सहायक होती है।) वह करण कारक कहलाता है; जैसे–

रामः चषकेण जलं पिबति ।

वृद्धः दण्डेन चलति ।

आचार्यः सुधाखण्डेन लिखति ।

इन वाक्यों में चषकेण, दण्डेन तथा सुधाखण्डेन में करण कारक हैं। क्योंकि इनके द्वारा क्रिया की जा रही है। अतः इनमें तृतीया विभक्ति हुई है।

4. सम्प्रदान कारक– जिसके लिए किया की जाती है. उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–

सः पुत्राय फलं यच्छति ।

बालकः क्रीडनकाय क्रन्दति ।

छात्राः पठनाय विद्यालयं गच्छन्ति ।

इन वाक्यों में '**पुत्राय**, **क्रीडनकाय** तथा **पठनाय**' सम्प्रदान कारक हैं, क्योंकि इनके लिए क्रिया की जा रही है। अतः इन पदों में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. अपादान कारक– जिस पद से अलग (पृथक्) होने का पता चले, उसे अपादान कारक कहते हैं। उसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

छात्राः विद्यालयात् आगच्छन्ति ।

अहं कूपात् जलम् आनयामि ।

हस्तात् कलमं पतति ।

इन वाक्यों में **विद्यालयात्**, **कूपात्** तथा हस्तात् अपादान कारक हैं, क्योंकि इनसे अलग होने का भाव प्रकट हो रहा है। अतः इन पदों में पंचमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

6. सम्बन्ध कारक– जिन पदों से किसी व्यक्ति या वस्तु का दूसरे से संबंध होता है, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। उसमें षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

रामस्य भाता लक्ष्मणः अस्ति।

एतत् देवस्य कलमम् अस्ति ।

मम देशस्य नाम भारतम् अस्ति ।

इन वाक्यों में **रामस्य**, **देवस्य** तथा **देशस्य** का अन्य पदों के साथ सम्बन्ध हैं। अतः इन पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

7. अधिकरणकारक– जिस पद के माध्यम से क्रिया के आधार को व्यक्त किया जाता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

जलं घटे अस्ति।

जनाः गृहे वसन्ति।

कमलानि सरोवरे विकसन्ति।

इन वाक्यों में **घटे**, **गृहे** तथा **सरोवरे** पद क्रिया के आधार है। अतः इन पदों में सभी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

8. सम्बोधन कारक— किसी को बुलाने, सम्बोधित करने या पुकारने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग होता है उन्हें सम्बोधन कारक कहते हैं; जैसे—

हे कृष्ण! त्वं कुत्र गच्छसि?

हे बालिके! भवत्याः नाम किम् अस्ति?

हे छात्राः! वयं भारतीयाः स्मः।

शब्दरूपाणि

मूल रूप में शब्दों को प्रातिपदिक कहते हैं। वाक्य में प्रयोग करने के लिए प्रातिपदिक शब्दों के रूप चलते हैं, तभी वे 'पद' बनते हैं और वाक्य में प्रयुक्त होते हैं।

संस्कृत वर्णमाला स्वर और व्यञ्जन दो भागों में विभक्त है, अतः शब्द भी स्वरान्त (अजन्त) और व्यञ्जनान्त (हलन्त) होते हैं।

स्वरान्त जिन शब्दों के अंत में स्वर आते हैं, उन्हें हम स्वरान्त कहते हैं। जिस स्वर से शब्द का अन्त होता है, उसी के अनुरूप का उसका नाम होता है, जैसे राम शब्द के अंत में "अ" है तो उसे अकारान्त कहते हैं। इसी प्रकार—

'**आ**' से अन्त होने वाले आकारान्त

'**इ**' से अन्त होने वाले इकारान्त

'**ई**' से अन्त होने वाले ईकारान्त

'**उ**' से अन्त होने वाले उकारान्त

'**ऊ**' से अन्त होने वाले ऊकारान्त

'**ऋ**' से अन्त होने वाले ऋकारान्त

यहां हम केवल स्वरान्त शब्दों के विषय में जानेंगे। स्वरान्त शब्दों के भी तीन भेद होते हैं

पुंल्लिग स्वरान्त

स्त्रीलिंग स्वरान्त

नपुंसकलिंग स्वरान्त

2)उपपद–विभक्तिः

पदम् आश्रित्य या विभक्तिः भवति सा उपपद विभक्तिः"

जो विभक्ति किसी विशेष पद के कारण प्रयोग की जाती है. उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे–शिवाय नमः, पिता पुत्रेण सह गच्छति। यहाँ नमः पद के योग में चतुर्थी, और 'सह' पद के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है। आइए यहां हम द्वितीया, तृतीया और चतुर्थी उपपद विभक्ति के विषय में जानते हैं।

द्वितीया विभक्ति– अभितः, परितः, सर्वत, समया, निकषा, प्रति, धिक् और विना, आदि के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

अभितः (दोनों ओर) विद्यालयम् अभितः वृक्षाः सन्ति ।

परितः (चारों ओर) गुरु परितः छात्राः तिष्ठन्ति ।

सर्वतः (सभी ओर) वृक्ष सर्वतः खगाः कूजन्ति ।

समया (समीप) कूपं समया मम गृहम् अस्ति।

निकषा–(समीप) भक्तः प्रभुं निकषा वसति ।

प्रति –(ओर) पक्षिणः नीडं प्रति गच्छन्ति ।

धिक् – (धिक्कार) धिक् पिशुनम् ।

विना–(अभाव) जलं विना जीवनं नास्ति।

तृतीया विभक्ति – सह अर्थ वाले शब्दों, अलम्, विना आदि के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

सह (साथ) छात्राः आचार्येण सह प्रयोगशालां गच्छन्ति।

साकम् (साथ) गौः वत्सेन सह घासं खादति।

अलम् बस, मत करो अलं शयनेन ।

विना (मनुष्यः) ज्ञानेन विना पशुवत् भवति।

<u>चतुर्थी विभक्ति –</u> नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् आदि के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

नमः (नमस्कार) गणेशाय नमः।

स्वस्ति (कल्याण हो) प्रजाभ्यः स्वस्ति।

स्वाहा (देवों के लिए नमस्कार) इन्द्राय स्वाहा।

स्वधा (पितरों के लिए नमस्कार) पितृभ्यः स्वधा।

अलम् (समर्थ, पर्याप्त) रामः रावणाय अलम् ।

अभ्यासः

1. समुचितविकल्पं चित्वा वाक्यं पूरयत।

(सही विकल्पों का चयन करके वाक्य पूरा कीजिए।

(1) अहं .... प्रति गच्छामि।

(क) गृहः(ख) गृहम्(ग) गृहस्य

(2) बालकः........ सह गायति।

(क) मित्रं(ख) मित्रेण(ग) मित्रेभ्यः

(3) कृष्णः............... अलम् ।

(क) कंसस्य (ख) कंसाय(ग) कंसं

(4) मानवाः ...... विना जीवितुं न शक्नुवन्ति।

(ग) वायोः(ख) वायुः (ग) वायु

(ङ) .... नमः।

(क) आचार्येण (ख) आचार्याय (ग) आचार्यम्

2. प्रदत्तेषु शब्देषु उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

(दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति का प्रयोग करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क).......... परितः मार्गाः सन्ति। (विद्यालय)

(ख) अलम् । (विवाद)

(ग)........ स्वाहा। (सूर्य)

(घ) रामः ...... सह वनं गतवान्। (सीता)

(5) नमः...........। (राधाकृष्ण)

(घ) शब्दरूपाणि

1. जिन पुंल्लिङ्ग शब्दों के अंत में 'उ' स्वर आता है, उन्हें उकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द कहते हैं। जैसे– 'भानु' (सूर्य) या 'साधु' शब्द।

'भानु' शब्द के रूपः–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

अन्य प्रमुख उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दः

इसी प्रकार निम्नलिखित उकारान्त पुंल्लिंग शब्दों के रूप भी चलते हैं:

गुरु (शिक्षक)

साधु (सज्जन)

शिशु (बालक)

विष्णु

वायु (हवा)

रिपु (शत्रु)

पशु (जानवर)

2. जिन पुंल्लिङ्ग शब्दों के अंत में 'ऋ' स्वर आता है, उन्हें ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द कहते हैं। जैसे– 'पितृ' (पिता) या 'भ्रातृ'(भाई) शब्द।

'पितृ' शब्द के रूप–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्यामृ	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्यामृ	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

पितृ के समान ही ऋकारान्त पुंल्लिंग भ्रातृ (भाई), कर्तृ (करने वाला),दातृ (देने वाला),नेतृ (नेता/ले जाने वाला), हर्तृ (हरण करने वाला) शब्दों के रूप होते हैं।

3. जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अंत में 'ई' स्वर आता है, उन्हें ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द कहते हैं। जैसे नदी, जननी, पृथ्वी आदि।

'नदी' (ईकारान्त स्त्रीलिंग) शब्द के रूप–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

इसी प्रकार जननी, पत्नी, कुमारी, गौरी, पृथ्वी आदि शब्दों के रूप भी होते हैं।

4. जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अंत में 'उ' स्वर आता है, उन्हें उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द कहते हैं। जैसे धेनु, रज्जु आदि।

उकारान्त स्त्रीलिंग 'धेनु' (गाय) शब्द के रूप–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै / धेनवे'	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः / धेनोः'	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः / धेनोः'	धेन्वोः	धेनूनाम्

सप्तमी धेन्वाम् / धेनौ' धेन्वोः धेनुषु

सम्बोधन हे धेनो हे धेनू हे धेनवः

इसी प्रकार तनु (शरीर), रेणु (धूल), चञ्चु (चोंच), रज्जु (रस्सी) आदि के रूप भी होते हैं।

5. <u>सर्वनाम शब्दरूप</u>

युष्मद् और अस्मद् के पुंल्लिंग में एक समान रूप होते हैं–

युष्मद् (सर्वनाम–शब्दः)			
विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (सर्वनाम–शब्दः)		
एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	आवाम्	अस्मान्
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
मम	आवयोः	अस्माकम्
मयि	आवयोः	अस्मासु

'भवत्' (आप) एक सर्वनाम शब्द है। इसके तीनों लिंगों के रूप–

1. पुंल्लिग

विभक्ति एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथमा भवान् भवन्तौ भवन्तः

द्वितीया भवन्तम् भवन्तौ भवतः

तृतीया भवता भवद्भ्याम् भवद्भिः

चतुर्थी भवते भवद्भ्याम् भवद्भ्यः

पञ्चमी भवतः भवद्भ्याम् भवद्भ्यः

षष्ठी भवतः भवतोः भवताम्

सप्तमी भवति भवतोः भवत्सु

2. स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग में 'भवत्' का रूप 'भवती' (ईकारान्त) की तरह चलता है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवती	भवत्यौ	भवत्यः
द्वितीया	भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः
तृतीया	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
चतुर्थी	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
पञ्चमी	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
षष्ठी	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
सप्तमी	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु

3. नपुंसकलिंग

नपुंसकलिंक में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति समान होती है, बाकी रूप पुल्लिंग की तरह चलते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवत्	भवती	भवन्ति
द्वितीया	भवत्	भवती	भवन्ति
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्

सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु

'तत्' (वह) सर्वनाम के तीनों लिंगों के रूप–

1. पुल्लिंग 'तत्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

2. स्त्रीलिंग 'तत्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

3. नपुंसकलिंग 'तत्'

नपुंसकलिंग के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में पुल्लिंग से भिन्न होते हैं, जबकि तृतीया से सप्तमी तक के रूप पुंल्लिंग के समान ही रहते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत् / तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत् / तद्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

सर्वनाम में सम्बोधन का प्रयोग नहीं होता है।

(ङ) धातुरूपाणि

'धाव्' (दौड़ना) धातु के पाँचों प्रमुख लकारों में रूप–

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावति	धावतः	धावन्ति
मध्यम पुरुष	धावसि	धावथः	धावथ
उत्तम पुरुष	धावामि	धावावः	धावामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धाविष्यति	धाविष्यतः	धाविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धाविष्यसि	धाविष्यथः	धाविष्यथ

उत्तम पुरुष	धाविष्यामि	धाविष्यावः	धाविष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
मध्यम पुरुष	अधावः	अधावतम्	अधावत
उत्तम पुरुष	अधावम्	अधावाव	अधावाम

4. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा –)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावतु	धावताम्	धावन्तु
मध्यम पुरुष	धाव	धावतम्	धावत
उत्तम पुरुष	धावानि	धावाव	धावाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में –)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावेत्	धावेताम्	धावेयुः
मध्यम पुरुष	धावेः	धावेतम्	धावेत
उत्तम पुरुष	धावेयम्	धावेव	धावेम

<u>'कृ' (करना) धातु के पाँचों प्रमुख लकारों में रूप–</u>

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथम पुरुष करोति कुरुतः कुर्वन्ति

मध्यम पुरुष करोषि कुरुथः कुरुथ

उत्तम पुरुष करोमि कुर्वः कुर्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञावाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

4. लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

<u>**दृश्** (देखना) धातु के रूप पाँचों मुख्य लकारों में रूप–</u>

उल्लेखनीय है कि लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में 'दृश्' को 'पश्य' आदेश हो जाता है, जबकि लृट् लकार में दृश् रहते हुए 'द्रक्ष्य' बन जाता है।

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु

मध्यम पुरुष पश्य पश्यतम् पश्यत

उत्तम पुरुष पश्यानिपश्याव पश्याम

4. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचनबहुवचन

प्रथम पुरुष अपश्यम् अपश्यताम् अपश्यन्

मध्यम पुरुष अपश्यः अपश्यतम् अपश्यत

उत्तम पुरुष अपश्यम् अपश्याव अपश्याम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष एकवचन द्विवचनबहुवचन

प्रथम पुरुष पश्येत पश्येताम् पश्येयुः

मध्यम पुरुष पश्येः पश्येतम् पश्येत

उत्तम पुरुष पश्येयम् पश्येव पश्येम

'श्रु' (सुनना) धातु के पाँचों मुख्य लकारों में रूप–

उल्लेखनीय है कि 'श्रु' धातु के रूप बदलते समय 'श्रु' का 'शृणु' हो जाता है।

1. लट् लकार (वर्तमान काल –)

पुरुष एकवचन द्विवचनबहुवचन

प्रथम पुरुष शृणोति शृणुतः शृण्वन्ति

मध्यम पुरुष शृणोषि शृणुथः शृणुथ

उत्तम पुरुष शृणोमि शृणुवः शृणुमः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञा / अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

4. लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात

उत्तम पुरुष	श्रृणुयाम्	श्रृणुयाव	श्रृणुयाम

गै ('गाना') धातु के रूप :–

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायति	गायतः	गायन्ति
मध्यम पुरुष	गायसि	गायथः	गायथ
उत्तम पुरुष	गायामि	गायावः	गायामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गास्यति	गास्यतः	गास्यन्ति
मध्यम पुरुष	गास्यसि	गास्यथः	गास्यथ
उत्तम पुरुष	गास्यामि	गास्यावः	गास्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायतु	गायताम्	गायन्तु
मध्यम पुरुष	गाय	गायतम्	गायत
उत्तम पुरुष	गायानि	गायाव	गायाम

4. लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथम पुरुष अगायत् अगायताम् अगायन्

मध्यम पुरुष अगायः अगायतम् अगायत

उत्तम पुरुष अगायाम् अगायाव अगायाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए/विधि)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायेत्	गायेताम्	गायेयुः
मध्यम पुरुष	गायेः	गायेतम्	गायेत
उत्तम पुरुष	गायेयम्	गायेव	गायेम

<u>**नृत्** (नाचना/नृत्य करना) धातु के रूप–</u>

इसमें धातु के साथ 'य' जुड़कर 'नृत्य' बन जाता है।

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

(नृत् धातु का भविष्यत् काल में 'नर्तिष्य' रूप बनता है)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति

मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामहः

3. लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

4. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येयम्	नृत्येय
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

'**भू**' (होना) धातु के पाँच प्रमुख लकारों के रूप–

1. लट् लकार (वर्तमान काल –)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

3. लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

4. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए / संभावना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

<u>**चल्** (चलना) धातु के पाँचों लकारों के रूप–</u>

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलावः	चलामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

3. लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचलत्	अचलताम्	अचलन्

मध्यम पुरुष अचलः अचलतम् अचलत

उत्तम पुरुष अचलम् अचलाव अचलाम

4. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलतु	चलताम्	चलन्तु
मध्यम पुरुष	चल	चलतम्	चलत
उत्तम पुरुष	चलानि	चलाव	चलाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलेत्	चलेताम्	चलेयुः
मध्यम पुरुष	चलेः	चलेतम्	चलेत
उत्तम पुरुष	चलेयम्	चलेव	चलेम

<u>'**चर्**' धातु (अर्थः चलना या चरना) के पाँचों लकारों में रूप–</u>

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरति	चरतः	चरन्ति
मध्यम पुरुष	चरसि	चरथः	चरथ
उत्तम पुरुष	चरामि	चरावः	चरामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरिष्यति	चरिष्यतः	चरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चरिष्यसि	चरिष्यथः	चरिष्यथ
उत्तम पुरुष	चरिष्यामि	चरिष्यावः	चरिष्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञा/अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरतु	चरताम्	चरन्तु
मध्यम पुरुष	चर	चरतम्	चरत
उत्तम पुरुष	चराणि	चराव	चराम

4. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचरत्	अचरताम्	अचरन्
मध्यम पुरुष	अचरः	अचरतम्	अचरत
उत्तम पुरुष	अचरम्	अचराव	अचराम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए/विधि)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरेत्	चरेताम्	चरेयुः
मध्यम पुरुष	चरेः	चरेतम्	चरेट
उत्तम पुरुष	चरेयम्	चरेव	चरेम

'**स्मृ**' (याद करना) धातु के पाँचों लकारों में रूप–

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उत्तम पुरुष	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

2. लृट् लकार (भविष्यत्काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उत्तम पुरुष	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञावाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
मध्यम पुरुष	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उत्तम पुरुष	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

4. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्

मध्यम पुरुष अस्मरः अस्मरतम् अस्मरत

उत्तम पुरुष अस्मरम् अस्मराव अस्मराम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथम पुरुष स्मरेत् स्मरेताम् स्मरेयुः

मध्यम पुरुष स्मरेः स्मरेतम् स्मरेत

उत्तम पुरुष स्मरेयम् स्मरेव स्मरेम

˙ <u>**'पत्'** (गिरना) धातु के पाँचों प्रमुख लकारों में रूप</u>

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथम पुरुष पतति पततः पतन्ति

मध्यम पुरुष पतसि पतथः पतथ

उत्तम पुरुष पतामि पतावः पतामः

2. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

'' प्रथम पुरुष''पतिष्यति पतिष्यतः पतिष्यन्ति

मध्यम पुरुष पतिष्यसि पतिष्यथः पतिष्यथ

उत्तम पुरुष पतिष्यामि पतिष्यावः पतिष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपतत्	अपतताम्	अपतन्
मध्यम पुरुष	अपतः	अपततम्	अपतत
उत्तम पुरुष	अपतम्	अपताव	अपताम

4. लोट् लकार (आज्ञा / अनुज्ञा)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पततु	पतताम्	पतन्तु
मध्यम पुरुष	पत	पततम्	पतत
उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतेत्	पतेताम्	पतेयुः
मध्यम पुरुष	पतेः	पतेतम्	पतेत
उत्तम पुरुष	पतेयम्	पतेव	पतेम

(च) अव्ययपदानि

संस्कृत में अव्यय वे शब्द हैं जो व्याकरणिक रूप से कभी बदलते नहीं हैं, यानी 'जो व्यय न हो'. अर्थात् जो लिंग, वचन, पुरुष, कारक या काल के कारण बदलते नहीं हैं और हमेशा एक ही रूप में रहते हैं। जैसे कि नवमी कक्षा में हम पढ़ चुके हैं। अनुवाद और वाक्यप्रयोग के लिए इनकी आवश्यकता होती है। यहां हम कुछ नए अव्यय पढ़ते हैं। जैसे कि **अधुना** (अब), **सदा** (हमेशा),

यदा–तदा (जब–तब) **एकदा** (एक बार), **कदा** (कब), **इदानीम्** (इस समय), **एवम्** (इस प्रकार), **यथा–तथा** (जैसा–वैसा), **शीघ्रम्** (जल्दी), **मन्दम्** (धीरे), **मिथ्या** (झूठ), **वृथा** (व्यर्थ)।

उदाहरण–

अधुना= अब, इस समय

उदाहरणम्– अधुना अहं पठामि (अब मैं पढ़ता हूँ).

सदा= हमेशा, सदैव

उदाहरणम्– सदा सत्यं वद (हमेशा सच बोलो).

यदा–तदा= जब–तब,

उदाहरणम्– यदा वर्षा भवति, तदा मयूरा नृत्यन्ति (जब बारिश होती है, तब मोर नाचते हैं).

एकदा= एक बार, किसी एक समय में

उदाहरणम्– एकदा एकः व्याघ्रः आसीत् (एक बार एक बाघ था).

कदा= कब? (प्रश्नवाचक).

उदाहरणम्– त्वं कदा आगमिष्यसि? (तुम कब आओगे?).

इदानीम्= अब, अभी

उदाहरणम्– इदानीम् विद्यालयः गच्छ (अब विद्यालय जाओ).

एवम्= इस प्रकार, ऐसे ही .

उदाहरणम्– सः एवम् अवदत् (उसने इस प्रकार कहा).

यथा–तथा= जैसा–वैसा (तुलनात्मक).

उदाहरणम्– यथा राजा, तथा प्रजा (जैसा राजा, वैसी प्रजा).

शीघ्रम्= जल्दी, शीघ्रता से

उदाहरणम्– त्वं शीघ्रम् आगच्छ (तुम जल्दी आओ).

मन्दम्= धीरे–धीरे, मंद गति से

उदाहरणम्– सर्पः मन्दम् गच्छति (साँप धीरे–धीरे चलता है).

मिथ्या= झूठ, असत्य

उदाहरणम्– मिथ्या मा वद (झूठ मत बोलो)

अभ्यासः–

प्रश्नः1– उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(क) सत्यं वद............ मा वद। (झूठ मत बोलो)

(ख) कच्छपः .... चलति। (कछुआ धीरे चलता है)

(ग) .... एकः राजा आसीत्। (एक बार एक राजा था)

(घ) .... राजा ....प्रजा। (जैसा राजा वैसी प्रजा)

मञ्जूषा

यथा तथा, एकदा, मन्दम्, मिथ्या

प्रश्नः 2– अधोलिखितानां अव्ययपदानां प्रयोगं कृत्वा वाक्यरचनां कुरुत।

(क) कदा 1.त्वं...............................

(ख) शीघ्रम् 2......................कुरु।

(ग) सदा 3. ....वद।

(घ) वृथा 4. समयं ....।

प्रश्नः 3– रेखाङ्कितपदं शुद्धं कुरुत।

(क) अहं पृच्छामि यद् भवान् यदा गमिष्यति?

(ख) सदा इदानीम् वद।

(ग) यथा राजा.............वृथा प्रजा।

(घ) ....सूर्यः उदेति तदा चटका कूजति।

प्रश्नः 4– 'क' स्तम्भस्य 'ख' स्तम्भेन सह मेलनं कुरुत।

(क)	(ख)
वृथा	असत्यम्/झूट
इदानीम्	व्यर्थम्/बेकार
मिथ्या	अधुना/इस समय
मन्दम्	सर्वदा/हमेशा
सदा	शनैः/धीरे

(च) संख्याज्ञानम्

संस्कृत भाषा में 1 से 100 तक की गिनती में 1 से 4 तक लिंग (पुंल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग) के अनुसार शब्द बदलते हैं, लेकिन 5 से आगे सभी लिंगों के लिए एक ही रूप रहता है, जैसेः एकः (पुंल्लिंग), एका (स्त्रीलिंग), एकम् (नपुंसकलिंग), द्वौ (पुंल्लिंग), द्वे (स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग), त्रयः (पुंल्लिंग), तिस्रः (स्त्रीलिंग), त्रीणि (नपुंसकलिंग), चत्वारः (पुंल्लिंग), चतस्रः (स्त्रीलिंग), चत्वारि (नपुंसकलिंग), और फिर पञ्च (5), षट् (6), सप्त (7), अष्ट (8), नव (9), दश (10), आदि, जो आगे

चलकर विंशतिः (20), त्रिंशत् (30), चत्वारिंशत् (40), और अंत में शतम् (100) बनते हैं। जिनमें एकविंशतिः (21) (एक + विंशतिः) जैसी संधि होती है। संस्कृत में 1 से 100 तक पूरी संख्याएं इस प्रकार हैं–

	पुँल्लिग,	स्त्रीलिंग,	नपुंसकलिंग)	हिंदी
1	एकः,	एका,	एकम्	एक
2	द्वौ,	द्वे,	द्वे	दो
3	त्रयः,	तिस्रः,	त्रीणि	तीन
4	चत्वारः,	चतस्रः,	चत्वारि	चार
5	पञ्च			पाँच
6	षट्			छः
7	सप्त			सात
8	अष्टौ, अष्ट			आठ
9	नव			नौ
10	दश			दस
11	एकादश			ग्यारह
12	द्वादश			बारह
13	त्रयोदश			तेरह
14	चतुर्दश		चौदह	
15	पञ्चदश		पन्द्रह	
16	षोडश		सोलह	

17	सप्तदश	सत्रह
18	अष्टादश	अठारह
19	ऊनविंशतिः, एकोनविंशतिः, नवदश	उन्नीस
20	विंशतिः	बीस
21	एकविंशतिः	इक्कीस
22	द्वाविंशतिः	बाईस
23	त्रयोविंशतिः	तेईस
24	चतुर्विंशतिः	चौबीस
25	पञ्चविंशतिः	पच्चीस
26	षड्विंशतिः	छब्बीस
27	सप्तविंशतिः	सत्ताईस
28	अष्टविंशतिः	अट्ठाईस
29	ऊनत्रिंशत्, एकोनत्रिंशत्, नवविंशः, नवविंशतिः	उनतीस
30	त्रिंशत्	तीस
31	एकत्रिंशत्	इकत्तीस
32	द्वात्रिंशत्	बत्तीस
33	त्रयस्त्रिंशत्	तेतीस
34	चतुर्त्रिंशत्	चौतीस
35	पञ्चत्रिंशत्	पैंतीस

36	षट्त्रिंशत्	छत्तीस
37	सप्तत्रिंशत्	सैंतीस
38	अष्टात्रिंशत्	अड़तीस
39	ऊनचत्वारिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्, नवत्रिंशत्	उनतालीस
40	चत्वारिंशत्	चालीस
41	एकचत्वारिंशत्	इकतालीस
42	द्वाचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्	बयालीस
43	त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्	तेतालीस
44	चतुश्चत्वारिंशत्	चवालीस
45	पंचचत्वारिंशत्	पैंतालीस
46	षट्चत्वारिंशत्	छियालीस
47	सप्तचत्वारिंशत्	सैंतालीस
48	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्	अड़तालीस
49	ऊनपञ्चाशत्, एकोनपञ्चाशत्, नवचत्वारिंशत्	ऊनचास, ऊनपचास
50	पञ्चाशत्	पचास
51	एकपञ्चाशत्	इक्यावन
52	द्वापञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्	बावन
53	त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्	तिरेपन
54	चतुःपञ्चाशत्	चौवन

55	पञ्चपञ्चाशत्	पचपन
56	षट्पञ्चाशत्	छप्पन
57	सप्तपञ्चाशत्	सत्तावन
58	अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्	अट्ठावन
59	ऊनषष्ठिः, एकोनषष्टिः, नवपञ्चाशत्	ऊनसठ
60	षष्टिः	साठ
61	एकषष्टिः	इकसठ
62	द्विषष्टिः, द्वाषष्ठिः	बासठ
63	त्रिषष्टिः, त्रयःषष्ठिः	तिरेसठ
64	चतुःषष्टिः	चौसठ
65	पंचषष्टिः	पैसठ
66	षट्षष्टिः	छियासठ
67	सप्तषष्टिः	सड़सठ
68	अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः	अड़सठ
69	ऊनसप्ततिः, एकोनसप्ततिः, नवषष्टिः	उनहत्तर
70	सप्ततिः	सत्तर
71	एकसप्ततिः	इकहत्तर
72	द्विसप्ततिः, द्विसंप्ततिः	बहत्तर
73	त्रिसप्ततिः, त्रयःसप्ततिः	तिहत्तर

74	चतुःसप्ततिः	चौहत्तर
75	पंचसप्ततिः	पिचत्तर
76	षट्सप्ततिः	छियत्तर
77	सप्तसप्ततिः	सतत्तर
78	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः	अठत्तर
79	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः, ऊनाशीतिः	उन्यासी
80	अशीतिः	अस्सी
81	एकाशीतिः	इक्यासी
82	द्वाशीतिः,	बियासी
83	त्र्यशीतिः	तिरासी
84	चतुरशीतिः	चौरासी
85	पंचाशीतिः	पिच्चासी
86	षडशीतिः	छियासी
87	सप्ताशीतिः	सत्तासी
88	अष्टाशीतिः	अट्ठासी
89	नवाशीतिः, एकोननवतिः, ऊननवतिः	नवासी
90	नवतिः	नब्बे
91	एकनवतिः	इक्यानबे
92	द्वानवतिः, द्वानवतिः	बानबे

93	त्रिणवतिः	तिरानबे
94	चतुर्णवतिः	चौराणबे
95	पंचनवतिः	पिचानबे
96	षण्णवतिः	छियानबे
97	सप्तनवतिः	सतानबे
98	अष्टनवतिः, अष्टानवतिः	अठानबे
99	नवनवतिः, एकोनशतम्, ऊनशतम्	निन्यानबे
100	शतम्, एकशतम्	सौ, एक सौ

अभ्यासः

1. दिये गये चित्र को देख कर प्रश्नों को उत्तर दें।

(क) चित्रे कति छात्राः सन्ति?' ....

(ख) चित्रे कति बालकाः खेलन्ति?.................................

(ग) चित्रे कति बालिकाः खेलन्ति?.................................

(घ) चित्रे कति वृक्षाः सन्ति?.......................................

(ङ) चित्रे कति पुष्पाणि सन्ति?.................................

(च) चित्रे कति शिक्षिकाः पाठयन्ति?.................................

2. दिये गये चित्र को देख कर प्रश्नों को उत्तर दें।

(क) युवकस्य समीपे कति फलानि सन्ति?"

(ख) तस्य समीपे कति पुस्तकानि सन्ति?"

(ग) तस्य समीपे कति कन्दुकानि सन्ति?

(घ) तस्य समीपे कति पुष्पधान्यः सन्ति?

1. निम्नलिखित में से अशुद्ध क्रम को पहचानिए

(क) चतुर्विंशतिः पञ्चविंशतिः सप्तविंशतिः षड्विंशतिः

(ख) द्वादश षोडश चतुर्दश पञ्चदश

(ग) द्वानवतिः त्रिणवतिः पञ्चनवतिः चतुर्णवतिः

(घ) एकत्रिंशत् द्वात्रिंशत् चतुस्त्रिंशत्, त्रयस्त्रिंशत्

(ङ) एकाशीतिः द्व्यशीतिः चतुरशीतिः त्र्यशीतिः

3.नैतिक शिक्षा

श्लोकाः –

1. विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्।।

अन्वयः – विद्या विनयं ददाति, विनयात् पात्रतां याति, पात्रत्वात् धनम् धनात् धर्मं ततः सुखम् आप्नोति।

अर्थः – विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से योग्यता आती है, योग्यता से धन, धन से धर्म तथा उस धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

भावार्थः – विद्यया सर्वं प्राप्यते यथा विद्यायाः विनयं विनयात् योग्यतां, योग्यतायाः धनं, धनात् धर्मं ततश्च सुखम् आप्नोति।

2. पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः,
परोपकाराय सतां विभूतयः।।

अन्वयः – नद्यः स्वयम् एव अम्भः न पिबन्ति, वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति, वारिवाहाः खलु सस्यं न अदन्ति, (यतो हि) सतां विभूतयः परोपकाराय (भवन्ति)।

अर्थः – नदियाँ अपना पानी स्वयं नहीं पीतीं है। वृक्ष स्वयं के फलों को स्वयं नहीं खाते हैं। बादल (अपने पानी द्वारा उगाया हुआ) अनाज खुद नहीं खाते है, क्योंकि सज्जन पुरुषों की समृद्धियाँ (धनादि) परोपकार के लिए ही होती हैं।

भावार्थः– यथा नद्यः स्वजलं स्वयं न पिबन्ति, वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति, मेघाः स्वजलसंचितं सस्यं स्वयं न खादन्ति तथैव सज्जनानां धनादिवस्तूनि परोपकाराय एव भवन्ति।

3. **अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**

उदारचरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अन्वयः – अयं निजः परः वा इति लघुचेतसाम् (भवति) उदारचरितानां तु वसुधा एव कुटुम्बकम् (भवति)।

अर्थः – यह अपना है अथवा पराया है यह गिनती (सोच) छोटे ह्रदय (संकुचित ह्रदय) वाले व्यक्तियों की होती है, उदार ह्रदय वाले लोगो के लिए तो पूरी पृथ्वी, ही एक परिवार के समान होती है।

भावार्थः – ये जनाः अयं निजः परः वा इति कुर्वन्ति तेषां गणना लघुह्रदयेषु भवति, परं ये उदारचरिताः भवन्ति तेषां कृते तु सम्पूर्णा पृथ्वी कुटुम्बकं भवति।

4. **साहित्यसंगीत–कलाविहीनः,**

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः,

तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।

अन्वयः– साहित्य–संगीत–कलाविहीनः पुच्छविषाणहीनः साक्षात् पशुः, तृणम् न खादन् अपि जीवमानः तद् पशूनाम् परमं भागधेयम्।

अर्थः— जो मनुष्य साहित्य संगीत व कला से वंचित होता है वह बिना पूंछ तथा बिना सींगों वाले साक्षात् पशु के समान होता है। वह बिना घास खाए जीवित रहता है यह पशुओं के लिए निसन्देह सौभाग्य की बात है।

भावार्थः— यस्य मनुष्यस्य साहित्य—संगीत—कलासु रुचिः न भवति सः पुच्छविषाणहिनः पशुः भवति। सः तृणम् अखादन् अपि जीवति एतद् पशूनां परमं सौभाग्यम् अस्ति।

5. **निदन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,**
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पद ने धीराः।।

अन्वयः— यदि नीतिनिपुणाः निन्दन्तु वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः यथेष्टं समाविशतु वा गच्छतु अद्य एव मरणम् अस्तु वा युगान्तरे (परं) धीराः (मानवाः) न्यायात् पथः पदं न प्रविचलन्ति।

अर्थः— नीति में निपुण लोग चाहे निन्दा करें अथवा प्रशंसा करें। लक्ष्मी आए अथवा इच्छानुसार चली जाए, आज ही मृत्यु हो जाए अथवा युगों के बाद हो, परन्तु धैर्यशाली मनुष्य न्याय के रास्ते से एक पग भी विचलित नहीं होते।

भावार्थः— नीतिज्ञाः जनाः निन्दन्तु प्रशंसन्तु वा, लक्ष्मीः यथेच्छम् आगच्छतु गच्छतु वा, अद्यैव मृत्युः भवेत् युगान्तरे वा परं धीराः न्याय्यात् पथः पदमेकं न विचलन्ति।

शब्दविस्तारः—

पात्रताम्	योग्यताम्	योग्यता को	Ability
आप्नोति	लभते	प्राप्त करता है	Receives
अम्भः	जलम्	पानी को	To water
अदन्ति	खादन्ति	खाते हैं	Eat
सस्यं	धान्यादिकम्	अन्न (फसल) को	Crop
वरिवाहाः	मेघाः	बदल	Clouds

विभूतयः	सम्पत्तयः	सम्पत्तियाँ	Properties
लघुचेतसाम्	क्षुद्रहृदयानाम्	छोटे दिल वालों की	Of small hearts
उदारचरितानाम्	विशालहृदयानाम्	विशाल दिल वालों की	Of generous hearts
वसुधा	पृथ्वी	पृथ्वी	Earth
पुच्छविषाणहीनः	लाङ्गूलश्रृंगरहितः	पूँछ और सींगों से रहित	Without Tail and Horns
तृणं	घासं	घास को	To grass
भागधेयम्	सौभाग्यम्	सौभाग्य	Good Luck
स्तुवन्तु	प्रशंसन्तु	प्रशंसा करें	To praise
समाविशतु	आगच्छतु	आए	Come
यथेष्टम्	यथेच्छम्	इच्छानुसार	As desired
पथः	मार्गात्	मार्ग से	By way
धीराः	धैर्यवन्तः	धैर्यशाली	Patient people
पदं	चरणं	पैर	Stem
युगान्तरे	युगानां पश्चात्	अनेक वर्षों के बाद	After many years

अभ्यासः –

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) विद्या किं ददाति ?

(ख) पात्रताम् कस्मात् याति ?

(ग) नद्यः स्वयमेव किं पिबन्ति ?

(घ) के सस्यं न अदन्ति ?

(ङ) सतां विभूतयः कस्मै भवन्ति ?

(च) विनयं का ददाति ?

(छ) वारिवाहाः किं न अदन्ति ?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) वसुधैव कुटुम्बकं केषां भवति ?

(ख) पुच्छविषाणहीनः पशुः साक्षात् कः भवति ?

(ग) किं न खादन्नपि जीवमानः अस्ति ?

(घ) धीराः कस्मात् पथः न प्रविचलन्ति ?

(ङ) नीतिनिपुणाः किं कुर्वन्तु ?

(ङ) लक्ष्मीः यथेच्छं किं करोतु ?

3. **अन्वयपूर्तिं कुरुत –**

(क) श्लोकः– विद्या ददाति .... ततः सुखम्।

अन्वयः– विद्या .... ददाति, विनयात् .... याति।

पात्रत्वात् धनात् .... ततः .... आप्नोति।

(ख) पिबन्ति नद्यः ....सतां विभूतयः।

अन्वयः– नद्यः .... अम्भः न ...., वृक्षाः .... स्वयं न ....। .... खलु सस्यं न .... , सतां ....परोपकाराय (भवन्ति) ।

(ग) अयं निजः ....कुटुम्बकम्।

अन्वयः– अयं निजः .... वा इति .... गणना। उदारचरितानां

तु .... एव ....।

(घ) साहित्य–संगीत .... परमं पशूनाम्।

अन्वयः– साहित्यसंगीत.कलाविहीनः साक्षात् .... पशुः (भवति)। तृणं न .... अपि ...., तत् .... परमं ....।

(ङ) निन्दन्तु नीति .... पदं न धीराः।।

अन्वयः– नीतिनिपुणाः यदि .... वा ...., लक्ष्मीः यथेष्टम् ....वा .... वा, (परं) धीराः .... पथः पदं न ....।

4. भावार्थपूर्तिं कुरुत –

(क) विद्या ददाति .... ततः सुखम्।

भावार्थः– विद्यया सर्वं .... यथा .... विनयं विनयात् .... योग्यतायाः धनं, ... धर्मं ततः च .... आप्नोति।

(ख) पिबन्ति नद्यः .... सतां विभूतयः।।

भावार्थः– यथा .... स्वजलं .... न पिबन्ति, वृक्षा .... स्वयं न ...., मेघाः .... सस्यं स्वयं न ...., तथैव .... धनादिवस्तूनि .... एव भवन्ति।

(ग) अयं निजः .... कुटुम्बकम्।।

भावार्थः– ये जनाः अयं .... परः वा इति .... तेषां गणना .... भवति, परं ये .... भवन्ति तेषां कृते तु .... पृथ्वी .... भवति।

भावार्थपूर्तिं कुरुत–

ये जनाः ––––––––सङ्गीते कलायां च –––––– न लभन्ते ते –––––हीनाः साक्षात् ––––––

भवन्ति, ————————— विना अपि जीवन्ति, एतत्——————— कृते —————————अस्ति।

(ग) – निन्दन्तु नीतिनिपुणाः ————————— पदं न धीराः ।।

भावार्थः—— एतत्—————————नास्ति यत् नीतिज्ञाः ————————— अथवा —————————

लक्ष्मीः इच्छानुसारं ——————————अथवा गच्छतु, मृत्युः अद्य एव ——————— अथवा ———————————————पश्चात् भवतु, परं —————————— पुरुषाः————————— पथः पदं न —————————।

4. भारतीय ज्ञान–परम्परा

(क) वैदिकसाहित्यस्य परिचयात्मकं ज्ञानम्–

1)वेद–वेदांगानि

वेद–वेदांग के विषय में हम कक्षा नवमी में विस्तार से पढ़ चुके हैं। तथापि पुनरभ्यास की दृष्टि से संक्षेप में इस पाठ के प्रथम भाग में पुनः परिचय दिया जा रहा है।

1. ऋग्वेदः–

ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभक्त है। प्रत्येक मण्डल में अनेक सूक्त हैं। सम्पूर्ण ऋग्वेद में 1028 सूक्त हैं। कई ऋचाओं के संग्रह को सूक्त कहते हैं, जो किसी विशेष देवता या विषयवस्तु से सम्बद्ध होते हैं। मण्डलों का विभाजन ऋषियों के परिवारों के आधार पर हुआ है। कई मण्डलों में किसी एक ही ऋषि द्वारा या उसके परिवार में पठित ऋचाओं का. ही संग्रह है। कई मन्त्रों की उद्भावना ऋषिकाओं ने भी की है, जैसे– लोपामुद्रा, अपाला, रोमशा आदि। ऋचाओं की कुल संख्या 10580 है। इस वेद के प्रथम तथा दशम मण्डल का आकार अपेक्षाकृत बड़ा है। इनमें अनेक वंशों के ऋषियों की रचनाएँ हैं। इन मण्डलों को विषयवस्तु तथा भाषा के आधार पर बाद की रचना भी माना गया है। इन्हीं मण्डलों में आर्यों के दार्शनिक और लौकिक विचार व्यक्त हुए हैं। अन्य मण्डल प्राचीनतम हैं। नवम मण्डल में सोम से सम्बद्ध मन्त्रों को एकत्र किया गया है। शेष मण्डलों में एक–एक गोत्र या वंश के ऋषियों की रचनाएँ हैं, इसलिए इनको वंश–मण्डल भी कहा जाता है। सप्तम मण्डल की ऋचाएँ सबसे पुरानी मानी जाती हैं।

यद्यपि ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएँ थी, किन्तु आज केवल शाकल, आश्वलायन एवं शांखायन शाखा ही मिलती हैं। ऋग्वेद में आर्यों की एक लंबी बौद्धिक परम्परा प्राप्त होती है। इस परम्परा में धार्मिक, सामाजिक और दार्शनिक विषयों का भी निरूपण हुआ है। भारत की प्राचीनतम संस्कृति के विकास के ज्ञान के लिए ऋग्वेद का अनुशीलन अपेक्षित है। धार्मिक दृष्टि से रचित सूक्तों की संख्या इस संहिता में अवश्य ही सर्वाधिक है। ऋग्वेद के सूक्तों में प्रमुख रूप से इन्द्र और अग्नि देवता की प्रार्थना है।

अन्य देवताओं में सविता, रुद्र, मित्र, वरुण, सूर्य, मरुत् आदि के अतिरिक्त उषा देवी भी हैं। यही नहीं, मन्यु (क्रोध) के रूप में अमूर्त देवता की भी प्रार्थना की गई है।

इन देवताओं में नियामक तत्त्व के रूप में ऋग्वेद के ऋषियों ने ईश्वर को जगत् का नियन्ता बताया है, जिसे उन्होंने पुरुष एवं हिरण्यगर्भ भी कहा है। हिरण्यगर्भ सूक्त में कहा गया है कि संसार के आरम्भ में हिरण्यगर्भ ही उत्पन्न हुआ, जो समस्त चराचर का स्वामी था और इसी ने स्वर्ग, पृथ्वी सभी को धारण किया। विशाल पर्वत और गंभीर सागर उस हिरण्यगर्भ रूप परमात्मा (प्रजापति) के अनुशासन में ही अवस्थित हैं।

ऋग्वेद संहिता में लौकिक विषयों पर भी ऋषियों की दृष्टि पड़ी है। इसमें द्यूत–क्रीड़ा के दोष, मण्डूकों की ध्वनि, विवाह की विधि, दान की महिमा इत्यादि विषयों का भी उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि ऋषियों ने धर्म और दर्शन की विवेचना में तल्लीन होकर लौकिक विषयों की उपेक्षा नहीं की थी। उषा के सूक्तों में वैदिक ऋषियों की ललित भावना भी दृष्टिगत होती है। ये सूक्त परवर्ती गीतिकाव्य के स्रोत समझे जाते हैं।

पुरुष–सूक्त में सृष्टि की प्रक्रिया का प्रतिपादन है, तो नासदीय सूक्त में सृष्टि की रहस्यमयता का भी संकेत है। सृष्टि से पहले न सत् था, न असत्। न ही उस समय मृत्यु थी, न अमरता। उस समय अन्धकार ही सर्वत्र वर्तमान था। इस प्रकार ऋग्वेद में गूढ़ दार्शनिक विचारों को भी महत्त्व दिया गया था। ऋग्वेद में बहुत से संवाद–सूक्त भी हैं, जिन्हें कुछ लोग नाटकों का प्रारम्भिक रूप भी कहते हैं। इन सूक्तों में पुरुरवा–उर्वशी तथा यम–यमी के संवाद सामान्य लोकजीवन के भावों को व्यक्त करते हैं। इन संवादों में प्रेम, हास्य, करुणा एवं वीरता जैसे मानवीय भावों का भी चित्रण हुआ है।

2. यजुर्वेदः– यजुर्वेद के दो रूप हैं–कृष्णयजुर्वेद तथा शुक्लयजुर्वेद। कृष्णयजुर्वेद की सर्वाधिक प्रसिद्ध शाखा तैतिरीय संहिता और शुक्ल यजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा वाजसनेयी संहिता है। कुछ लोग इसे ही मौलिक यजुर्वेद कहते हैं। इसमें केवल मन्त्रों का संग्रह है, जबकि कृष्णयजुर्वेद की संहिता में ब्राह्मण ग्रन्थ के विषय भी मिश्रित हैं। कृष्णयजुर्वेद की अन्य संहिताएँ हैं–मैत्रायणी, काठक, कपिष्ठल इत्यादि। इनका प्रचार दक्षिण भारत में अधिक है। यजुर्वेद अनुष्ठान–विषयक संहिता है। यज्ञ में अध्वर्यु के द्वारा प्रयुक्त मन्त्रों का इसमें संग्रह है। कृष्णयजुर्वेद में इन मन्त्रों के विषय में चर्चाएँ भी हैं, किन्तु शुक्लयजुर्वेद इन चर्चाओं से शून्य है। शुक्लयजुर्वेद में 40 अध्याय हैं, जिनमें विविध यज्ञों से सम्बद्ध मन्त्र संकलित हैं। इन यज्ञों में दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास, सोमयाग, वाजपेय, राजसूय, सौत्रामणि, अश्वमेध आदि प्रमुख हैं। इसके सोलहवें अध्याय को रुद्राध्याय कहते हैं, जिसमें रुद्र के विविध रूपों को नमस्कार किया गया है। चौंतीसवें अध्याय में शिवसंकल्प की प्रार्थना है। पैंतीसवें अध्याय में पितरों की प्रार्थना की गई है। अन्तिम अध्याय दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें ईश्वर को संसार का नियामक कहा गया है।

3. सामवेदः– वर्तमान में सामवेद की तीन–चार शाखाएँ ही उपलब्ध हैं। इनमें कौथुम शाखा अधिक लोकप्रिय है। सामवेद के मन्त्रों का प्रयोग यज्ञ में देवताओं के आवाहन के लिए उचित स्वर के साथ

उद्गाता द्वारा किया जाता था। इसलिए साम–मन्त्रों का पाठ नहीं, अपितु गान होता है। सामवेद छन्दोबद्ध है तथा 75 मन्त्रों को छोड़कर शेष मन्त्र ऋग्वेद में भी उपलब्ध होते हैं। सामवेद के मन्त्रों के गान में लय तथा स्वर का विशेष विधान है। सामवेद संहिता के दो भाग हैं– पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक। पूर्वार्चिक में आग्नेय, ऐन्द्र, पवमान तथा आरण्य–पर्व के रूप में मन्त्रों का विभाजन है। वस्तुतः इन देवताओं से सम्बद्ध मन्त्रों को पृथक् पृथक् रखा गया है। उत्तरार्चिक को दशरात्र, संवत्सर, एकाह आदि विषयों के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। सामवेद में ग्रामगेय (स्वर–विशेष) गानों की संख्या सर्वाधिक है। आरण्यगान में संकटपूर्ण और वर्जित रागों को संकलित किया जाता था। इसलिए ये ग्रामों में नहीं गाए जाते थे। इन दोनों से सम्बद्ध क्रमशः ऊहगान और ऊह्यगान हैं, जो यज्ञकार्यों में साम–मन्त्रों को क्रमबद्धता प्रदान करते हैं। इस प्रकार इसमें ये चार महत्त्वपूर्ण गान हैं– ग्राम, आरण्य, ऊह तथा ऊह्य।

सामवेद का महत्त्व संगीत की दृष्टि से बहुत अधिक है। इससे भारतीय संगीत का उद्भव हुआ। सामवेद के रागों का विकास धार्मिक तथा सांस्कृतिक दोनों प्रकार के गीतों से हुआ। सामगान की अनेक विधियों में (जो सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थों में विहित हैं) अब कुछ ही शेष हैं।

4. अथर्ववेदः– अथर्ववेद का विभाजन 20 काण्डों में किया गया है, जिनमें सूक्त और मन्त्र हैं। सूक्तों की संख्या 731 तथा मन्त्रों की 5849 है। इनमें से लगभग 1200 मन्त्र ऋग्वेद संहिता से लिए गए हैं। इस वेद का षष्ठांश गद्य में है। काण्डों के विभाजन में कोई विषय–व्यवस्था नहीं है, किन्तु एक सूक्त में किसी एक ही विषय से सम्बद्ध मन्त्र हैं। आरम्भिक काण्डों का संकलन व्यवस्था विशेष के अन्तर्गत है, क्योंकि प्रथम काण्ड में चार मन्त्रों वाले, द्वितीय काण्ड में पाँच मन्त्रों वाले, तृतीय में छः मन्त्रों वाले, चतुर्थ काण्ड में सात मन्त्रों वाले और पंचम काण्ड में आठ या अधिक मन्त्रों वाले सूक्त रखे गए हैं। छठे काण्ड के 142 सूक्तों में सभी तीन मन्त्र वाले हैं। इसी प्रकार सातवें काण्ड के 118 सूक्तों में एक–दो मन्त्रों वाले सूक्त हैं। पन्द्रहवाँ एवं सोलहवाँ काण्ड गद्य में है। ये भाषा–शैली की दृष्टि से ब्राह्मण–ग्रन्थों के समान लगते हैं। अथर्ववेद में ही सर्वप्रथम लौकिक विषयों को व्यापक महत्त्व दिया गया है। इसलिए इसकी विषयवस्तु में बहुत विविधता मिलती है। अथर्ववेद में कहीं जीविका–प्राप्ति के लिए प्रार्थना है तो कहीं ब्रह्मचर्य की महत्ता बतलाने के साथ–साथ सौमनस्य के लिए भी प्रार्थना की गई है और कहीं सौहार्द, प्रेम और साहचर्य की कामना की गयी है। यथा– "मैं तुम्हारे मन को सौहार्द तथा सौमनस्य से युक्त करता हूँ। सभी लोग परस्पर प्रेम रखें, जैसे गाय अपने बछड़े से रखती है। पुत्र पिता का अनुगामी हो, माता वात्सल्यमयी हो, पत्नी पति से मधुर वाणी का व्यवहार करे। भाई–भाई से द्वेष न करे, बहन बहन से द्वेष–न रखे, सभी अच्छे संकल्प लेकर कल्याण युक्त वाणी बोलें।" अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में भूमिसूक्त है, जिसमें पृथ्वी की महत्ता का प्रतिपादन है। इसी में कहा गया है– माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।

अथर्ववेद में दार्शनिक सूक्त भी आए हैं, जो ब्रह्म, तप और असत् के विषय में विचार करते हैं। ये विचार बाद में उपनिषदों में विकसित हुए। सामान्य वैदिक धर्म की मुख्य धारा से पृथक् विशुद्ध

लोक–प्रचलित विश्वासों का प्रतिपादक होने के कारण अथर्ववेद का वैदिक साहित्य में स्वतन्त्र महत्त्व है।

वेदाङ्गानि

कालक्रम से वैदिक संस्कृत के स्थान पर लौकिक संस्कृत का प्रचलन होने पर, वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करना तथा अर्थ समझना कठिन हो गया। यास्क ने कहा है कि वैदिक अर्थों को समझने में कठिनाई का अनुभव करने वाले लोगों ने निरुक्त तथा अन्य वेदाङ्गों की रचना की। वेदों के छः अंग माने गए– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष तथा छन्द। इन्हें समझने वाला व्यक्ति ही वेदों का सही उच्चारण, अर्थबोध एवं यज्ञ कार्य कर सकता था। इन सभी शास्त्रों के ग्रन्थ लौकिक संस्कृत में लिखे गए, क्योंकि इनके विकास का कारण ही था वैदिक संस्कृत का प्रयोग समाप्त हो जाना। इनका काल 800 ई. पू. से प्रारम्भ होता है।

शिक्षा– यह उच्चारण का विज्ञान है, जो स्वर–व्यञ्जन के उच्चारण का विधान करता है। इसका विस्तार प्रातिशाख्य ग्रन्थों में मिलता है। वेदों की पृथक् पृथक् शाखाओं का उच्चारण बतलाने के कारण इन्हें प्रातिशाख्य कहा जाता है। ऋक्प्रातिशाख्य शौनक–रचित ग्रन्थ है, जो ऋग्वेद के अक्षरों, वर्णों एवं स्वरों की संधियों का विवेचन करता है। इसी प्रकार अन्य वेदों के भी प्रातिशाख्य हैं, जो उन वेदों के उच्चारणों का वैशिष्ट्य बतलाते हैं। ये सभी सूत्र रूप में हैं।

कल्प– यह मुख्यतः वैदिक कर्मकाण्ड का प्रतिपादन करने वाला वेदाङ्ग है। कल्प का अर्थ है विधान। यज्ञ–सम्बन्धी विधान कल्प सूत्रों में दिए गए हैं। कल्प के चार भेद हैं, जिन्हें श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्बसूत्र कहते हैं। ये चारों विभिन्न वेदों के लिए पृथक् पृथक् हैं। श्रौतसूत्रों में श्रौतयज्ञों का विधान है, जैसे–दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, वाजपेय, अतिरात्र, पितृमेध इत्यादि। इस समय आश्वलायन, शांखायन (ऋग्वेद), कात्यायन (शुक्लयजुर्वेद), जैमिनीय (सामवेद) वैतान (अथर्ववेद) इत्यादि श्रौतसूत्र उपलब्ध हैं। गृह्यसूत्र गृह्याग्नि में होने वाले संस्कारों तथा गृह्ययागों का वर्णन करते हैं, जैसे उपनयन, विवाह आदि। सभी वेदों से सम्बद्ध लगभग 20 गृह्यसूत्र प्राप्त हैं। धर्मसूत्रों में मानव–धर्म, समाज–धर्म, राजधर्म तथा पुरुषार्थों का वर्णन है। इस समय छः धर्मसूत्र मिलते हैं– गौतम, आपस्तम्ब, वसिष्ठ, बौधायन, हिरण्यकेशी और विष्णुधर्मसूत्र। ये धर्मसूत्र ही परवर्ती स्मृतियों के आधार हैं। शुल्ब का अर्थ है मापने का सूत (धागा)। इन सूत्रों में यज्ञवेदिका के निर्माण आदि का वर्णन रेखागणित (ज्यामिति) की सहायता से किया गया है।

व्याकरण– इसे वेदों का मुख कहा गया है। इस शास्त्र में प्रकृति और प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युत्पति बतलाई जाती है। व्याकरण की बहुत लम्बी परम्परा इन्द्र आदि वैयाकरणों से चली, किन्तु उस परम्परा के अवशेष यत्र–तत्र उद्धरणों में ही पाए जाते हैं। प्रथम उपलब्ध व्याकरण ग्रन्थ के प्रणेता पाणिनि ही हैं, जिन्होंने अष्टाध्यायी के रूप में वैदिक और लौकिक संस्कृत दोनों भाषाओं का व्याकरण लिखा है। व्याकरण से वेदों की रक्षा होती है तथा वही पदशुद्धि का विचार

करता है। सम्प्रति पाणिनि की अष्टाध्यायी ही व्याकरण का प्रतिनिधि–ग्रन्थ है, जिस पर टीकाओं की समृद्ध परम्परा मिलती है।

निरुक्त– इसका अर्थ है निर्वचन। वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझाना ही निरुक्त का प्रयोजन है। इस समय यास्क रचित निरुक्त ही एक मात्र उपलब्ध निरुक्त है। वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु (पाँच अध्याय) के रूप में प्राप्त होता है। उसी की व्याख्या यास्क ने निरुक्त के 14 अध्यायों में की है। यास्क का काल 800 ई. पू. माना जाता है। निरुक्त वेदार्थज्ञान की कुंजी है।

ज्योतिष– यह काल का निर्धारण करने वाला वेदाङ्ग है। वैदिक–यज्ञ काल की अपेक्षा रखते हैं और वे किसी निश्चित काल में ही सम्पादित होते हैं, तभी उनका फल मिलता है। इसका निश्चय ज्योतिष करता है। काल का विभाजन, मुहूर्त का निश्चय, ग्रहों–नक्षत्रों की गति का निर्धारण इत्यादि ज्योतिष के ही विषय हैं। लगधाचार्य ने इन कार्यों के लिए वेदाङ्ग ज्योतिष नामक ग्रन्थ लिखा था। इसके दो संस्करण हैं– आर्च ज्योतिष (ऋग्वेद से सम्बद्ध) जिसमें 36 श्लोक हैं तथा याजुष् ज्योतिष (यजुर्वेद से सम्बद्ध), जिसमें 43 श्लोक हैं।

छन्दः – यह पद्यबद्ध वेदमन्त्रों के सही–सही उच्चारण के लिए उपयोगी वेदाङ्ग है। इससे वैदिक मन्त्रों के चरणों का जान होता है। इसका ज्ञान वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के लिए आवश्यक है। इससे छन्दः शास्त्र का महत्त्व सिद्ध होता है। वेदों में सात मुख्य छन्द प्रयुक्त हैं– गायत्री (आठ अक्षरों के तीन चरण), अनुष्टुप् (आठ अक्षरों के चार चरण), त्रिष्टुप् (11) अक्षरों के चार चरण) बृहती, जगती, पक्ति, उष्णिक् । छन्दः शास्त्र जानने से वैदिक मन्त्रों के चरणों की व्यवस्था समझी जा सकती है तथा मन्त्र–पाठ के समय उचित विराम हो सकता है।

2) उपनिषद् दर्शनानि च

उपनिषद् भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। वेदों का अंतिम भाग होने के कारण इन्हें वेदांत भी कहा जाता है। 'उपनिषद' शब्द का अर्थ है 'गुरु के पास बैठकर शिक्षा प्राप्त करना', जो शिष्य और गुरु के बीच गहन आध्यात्मिक ज्ञान के आदान–प्रदान को दर्शाता है।

उपनिषद् शब्द उप और नि उपसर्गपूर्वक सद्लृ धातु से बना है । इस धातु के तीन अर्थ हैं–––

(1.) विशरण अर्थात् नाश होना,

(2.) गति अर्थात् प्राप्त करना या जानना ,

(3.) अवसादन अर्थात् शिथिल होना ।

उपनिषदों के अध्ययन से अविद्या का नाश होता है। ब्रह्म–ज्ञान की प्राप्ति होती है और सांसारिक दुःख शिथिल होते हैं। उपनिषदों में ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन किया गया है।

उपनिषद् का मुख्य उद्देश्य आत्मा (ब्रह्म) और परमात्मा (ब्रह्म) के बीच के संबंध को समझाना और मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग को दर्शाना है। ये कर्मकांड और धार्मिक अनुष्ठानों की अपेक्षा ज्ञान और आत्म–साक्षात्कार पर अधिक जोर देते हैं।

प्रमुख उपनिषद्

कुल मिलाकर 108 उपनिषद माने जाते हैं, लेकिन इनमें से 10 को सबसे प्रमुख और महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जिन पर आदि शंकराचार्य ने भाष्य लिखे। इन्हें दशोपनिषद कहा जाता है–

ईशोपनिषद– यह उपनिषद कर्म और ज्ञान के बीच संतुलन को बताता है।

केनोपनिषद– यह उपनिषद इंद्रियों और मन की शक्तियों के स्रोत पर विचार करता है।

कठोपनिषद– इसमें नचिकेता और यम के संवाद के माध्यम से आत्मा की अमरता और मृत्यु के रहस्य का वर्णन है।

प्रश्न उपनिषद्– इसमें छह शिष्यों द्वारा पिप्पलाद ऋषि से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर हैं।

मुंडक उपनिषद्– इसमें 'सत्यमेव जयते' (सत्य की हमेशा जीत होती है) का प्रसिद्ध कथन है। यह परा विद्या (अध्यात्म ज्ञान) और अपरा विद्या (लौकिक ज्ञान) के बीच अंतर बताता है।

माण्डूक्य उपनिषद्– यह सबसे छोटा उपनिषद है, जो ॐ (ओम्) के महत्त्व और आत्मा की चार अवस्थाओं का वर्णन करता है।

तैत्तिरीय उपनिषद्– इसमें शिक्षा, ब्रह्मविद्या और आनंद के महत्त्व पर चर्चा की गई है।

ऐतरेय उपनिषद्– यह सृष्टि की उत्पत्ति और आत्मा के स्वरूप पर प्रकाश डालता है।

छांदोग्य उपनिषद्– इसमें 'तत् त्वम् असि' (वह तुम हो) का महावाक्य है, जो आत्मा और ब्रह्म की एकात्मकता को दर्शाता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् – शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध शतपथ–ब्राह्मण के 14 वें काण्ड के अन्तिम छः अध्यायों को ही बृहदारण्यकोपनिषद् कहा जाता है । इसमें आरण्यक और उपनिषद् का सम्मिश्रण होने से यह नाम पडा है । इसे ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् तीनों कह सकते हैं । इसमें कुल छः अध्याय हैं । यह आकार में सबसे विशाल उपनिषद् है । यह अध्यात्म–शिक्षा से ओत–प्रोत है ।

उपनिषदों की प्रासंगिकता उनके शाश्वत ज्ञान में निहित है, जो आत्मज्ञान, मोक्ष, और ब्रह्मांडीय सत्य के बोध पर केंद्रित है. वे जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने, आंतरिक शांति प्राप्त करने, और व्यक्ति को अहंकार से परे जाकर आनंद की अनुभूति करने में सहायक हैं. आज के भौतिकवादी समाज में

भी, उपनिषद सार्वभौमिक एकता और समानुभूति का संदेश देते हैं, जो हिंसा व घृणा को कम कर समाज में सद्भाव लाते हैं।

संस्कृत में 'दर्शन' शब्द का मूल अर्थ 'देखना' या 'दृष्टि' है। 'दर्शन' शब्द संस्कृत के दृश धातु से बना है इसलिए 'दर्शन' का अर्थ हुआ 'जिसके द्वारा देखा जाए'। ध्यान रहे, यहां देखने का मतलब आंखों से देखना नहीं है, तार्किक एवम् अन्तर्दृष्टि से देखना है। वह दृष्टि जिससे हम सत्य को देखते हैं या समझते हैं। यह केवल भौतिक दृष्टि नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि है। व्यापक अर्थ में दृश्यते यथार्थतत्त्वमनेन अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्त्व की अनुभूति (अनुभव) हो वही दर्शन है।

वैदिक परंपरा में 6 दर्शन का वर्णन है–

1. सांख्य 2. योग 3. न्याय

4. वैशेषिक

5. मीमांसा

6. वेदांत

सांख्यदर्शन

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्राचीन और प्रमुख शाखा है। यह दर्शन द्वैतवादी है। यह मानता है कि सृष्टि का निर्माण दो मूल तत्त्वों से हुआ है। यह प्रकृति और विकृति आदि के रूप में पच्चीस तत्त्वों को मानता है।

पुरुष (चेतन) यह अपरिवर्तनवादी, निष्क्रिय और शुद्ध चेतन है। यह आत्मा या चेतन का प्रतिनिधित्व करता है, जो साक्षी और ज्ञाता है।

प्रकृति (पदार्थ) यह सक्रिय, परिवर्तनशील और त्रिगुणात्मक (सत्त्व, रजस, तमस) है। यह सभी भौतिक और मानसिक जगत् का मूल कारण है, जिसमें शरीर, इंद्रियाँ और मन शामिल हैं।

सांख्य दर्शन के कुछ प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं–

सत्कार्यवाद इस सिद्धांत के अनुसार कार्य पहले से ही कारण में सूक्ष्म रूप से विद्यमान होता है। कुछ भी नया उत्पन्न नहीं होता, बल्कि अव्यक्त से संवाद होता है। जैसे, तेल पहले से ही तिल में मौजूद होता है।

त्रिगुणः प्रकृति तीन गुणों सत्त्व (प्रकाश), रजस (क्रिया) और तमस् (जड़ता) से मिलकर बनी है। इन गुणों के संतुलन और असंतुलन से ही सृष्टि का विकास होता है।

मोक्ष–सांख्य दर्शन के अनुसार, मोक्ष या कैवल्य की प्राप्ति तब होती है जब पुरुष (चेतना) अपनी वास्तविक प्रकृति को पहचान लेता है और खुद को प्रकृति (पदार्थ) के बंधनों से अलग कर लेता है। यह ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होता है। यह दर्शन ईश्वर को सृष्टि के निर्माता के रूप में स्वीकार नहीं करता है, बल्कि यह मानता है कि प्रकृति अपने अपना ही कार्य करती है। सांख्य का उद्देश्य पुरुष को प्रकृति से अलग करके परमस्वतंत्रता की स्थिति प्राप्त करना है।

योगदर्शनम् – योग दर्शन, भारतीय दर्शन के छह प्रमुख आस्तिक दर्शनों में से एक है। इसका संबंध 'योगसूत्र' से है। यह दर्शन केवल एक शारीरिक अभ्यास है। बल्कि यह मन, आत्मा और शरीर को एक साथ लाने वाला एक व्यापक आध्यात्मिक और सैद्धांतिक मार्ग है। इसका उद्देश्य जीवन के परम सत्य (मोक्ष या कैवल्य) को प्राप्त करना है।

योग का अर्थः 'योग' शब्द संस्कृत के 'युज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'जोड़ना' या 'एक करना'। योग दर्शन में इसका अर्थ व्यक्ति की आत्मा का परमात्मा से मिलन है। यह मन की चंचल वृत्तियों को शांत करने और चित्त को एकाग्र करने की एक प्रक्रिया है।

योग दर्शन का सबसे प्रमुख सिद्धांत 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' है, जिसका अर्थ है 'योग, मन की प्रवृत्तियों (विचारों, भावनाओं) का निरोध है'। जब मन की चंचल अवस्था शांत हो जाती है, तो व्यक्ति अपनी वास्तविक प्रकृति (शुद्ध निजी) को अनुभव कर पाता है।

अष्टांग योगः पतंजलि ने चित्त को शांत करनने और समाधि तक पहुँचने के लिए एक व्यवस्थित मार्ग 'अष्टांग योग' (आठ अंगों वाला योग) प्रस्तुत किया है। ये आठ अंग हैं–

यमः – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यह यम है।

नियमः – व्यक्तिगत निर्देश (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर–प्रणिधान)।

आसनः – शारीरिक मुद्राएं जो शरीर को स्थिर और स्वस्थ बनाती हैं।

प्राणायामः – श्वास और नियमन पर नियंत्रण।

प्रत्याहारः – इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर अंतर्मुखी करना।

धारणाः – मन को किसी एक विषय पर केन्द्रित देना।

ध्यान – मन को लगातार एक ही विषय पर बनाए रखना, एकाग्रता की गहरी अवस्था।

समाधिः – ध्यान की वह परम अवस्था है जिसमें मन और विषय का भेद मिट जाता है, और व्यक्ति अपनी आत्मा के साथ एक हो जाता है।

वैशेषिकदर्शन – वैशेषिक दर्शन की स्थापना महर्षि कणाद ने की थी। यह दर्शन मुख्य रूप से मादक द्रव्य और उनकी श्रेणियों का विश्लेषण पर केंद्रित है। इसका नाम 'विशेष' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'भेद' या 'विशिष्टता'। यह मानता है कि सभी वस्तुएँ चाहे वे समान दिखें, उनमें कुछ न कुछ मौलिक भिन्नता होती है।

मुख्य सिद्धांत पदार्थ

वैशेषिक दर्शन के अनुसार, ब्रह्मांड की हर वस्तु को सात संप्रदायों या पदार्थों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

द्रव्य– ये वे प्रतीकात्मक तत्व हैं जिन पर गुण और कर्म प्रभावी होते हैं। वैशेषिक दर्शन नौ प्रकार के द्रव्यों को मानता है– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल (समय), दिक् (दिशा), आत्मा और मन।

गुण– इन द्रव्यों में पाए जाने वाले गुण हैं, जैसे रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण आदि।

कर्म– ये द्रव्यों में होने वाली गतियाँ हैं, जैसे उत्क्षेपण (ऊपर उठना), अवक्षेपण (गिरना), अकुंचन (सिकुड़ना), प्रसारण (फ़ैलना), और गमन (चलना)।

सामान्य – यह वह गुण है जो एक ही जाति की अनेक वस्तुओं में पाया जाता है, जैसे 'मनुष्यत्व' जो सभी अवधारणाओं में समान है।

विशेष यह वह गुण है जो दो समान दिखने वाली वस्तुओं को भी अलग करता है। यह परमाणु, आत्मा, काल और दिक् के लिए विशिष्ट है।

समवाय– यह एक प्रकार का अविभाज्य संबंध है जो दो तत्त्वों के बीच होता है, जैसे कपड़े में धागों का संबंध या किसी वस्तु में उसके गुण का संबंध।

अभाव – यह किसी वस्तु के न होने का विवरण है। यह चार प्रकार के होते हैंरू प्राग्भाव (उत्पत्ति से पहले का अभाव), प्रध्वंसाभाव (विनाश के बाद का अभाव), अन्योन्याभाव (आपसी अभाव) और अत्यन्ताभाव (पूर्ण अभाव)।

न्यायदर्शन – न्याय दर्शन की स्थापना महर्षि गौतम ने की थी। इन्होंने न्याय सूत्र नामक ग्रंथ की रचना की। इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य तर्क और ज्ञान के माध्यम से सत्य का पता लगाना है।

न्याय दर्शन को तर्कशास्त्र भी कहा जाता है क्योंकि यह किसी भी विषय को समझने और सही निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए तार्किक पद्धतियों पर ज़ोर देता है। यह मानता है कि सही ज्ञान ही मोक्ष (दुःख से मुक्ति) का मार्ग है।

न्याय दर्शन के प्रमुख सिद्धांत

प्रमाण– न्याय दर्शन के अनुसार, सही ज्ञान प्राप्त करने के चार साधन (प्रमाण) हैं।

प्रत्यक्षः इन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, त्वचा, जीभ) द्वारा प्राप्त ज्ञान। जैसे, आग को देखकर गर्मी का अनुभव करना।

अनुमानः किसी एक चीज को देखकर दूसरी चीज का अंदाजा लगाना। जैसे, धुँआ देखकर आग का अनुमान लगाना।

उपमानः किसी भी जानी–पहचानी चीज से तुलना करके ज्ञान प्राप्त करना। जैसे, किसी अनजान जानवर (जैसे नीलगाय) को गाय जैसा बताकर समझना।

शब्दः किसी विश्वसनीय व्यक्ति या ग्रंथ के वचन से प्राप्त ज्ञान। जैसे, वेदों या गुरु की शिक्षा से प्राप्त ज्ञान।

पदार्थः न्याय दर्शन में दुनिया की सभी वस्तुओं को 16 पदार्थों में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें प्रमाण (ज्ञान का साधन), प्रमेय (ज्ञान का विषय), संशय (संदेह), प्रयोजन (उद्देश्य), और वाद (वाद–विवाद) शामिल हैं।

ईश्वरः न्याय दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को मानता है और उसे सृष्टि का रचयिता है, पालनकर्ता और संहारक को दर्शाता है। ईश्वर को सभी ज्ञान का स्रोत और सभी कर्मों का फल देने वाला माना जाता है।

मीमांसा– मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि जैमिनी हैं। उदाहरण के लिए 'मीमांसा सूत्र' नामक ग्रन्थ की रचना। मीमांसा' शब्द का अर्थ 'गंभीर विचार' या 'तार्किक विश्लेषण' है। यह दर्शन वेदों को प्रमाण मानता है। इसका मुख्य विषय धर्म, कर्मकांड, यज्ञ और वैदिक अनुष्ठानों का विवेचन है।

(ख) लौकिकसाहित्यस्य परिचयात्मकज्ञानम्–

1)पुराणानि

पुराण, संस्कृत में रचित हिंदू धर्म के पवित्र धार्मिक ग्रंथ हैं। पुराण शब्द की अनेक व्युत्पत्तियां प्राप्त होती हैं यथा– 'पुरा भवम् पुराणम्' जो प्राचीन समय में हुआ हो, पद्मपुराण के अनुसार 'पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन तत् स्मृतम्' अर्थात् जो पुरानी परम्पराओं का वर्णन करें वह पुराण कहलाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है जिनमें प्राचीन आख्यानों एवं घटनाओ का वर्णन हो उसे पुराण कहते हैं । इन ग्रंथों को वेदों के पूरक के रूप में देखा जाता है । इनमें जटिल वैदिक विचारों को कहानियों और दृष्टान्तों के माध्यम से सरल और सर्वजन सुलभ बनाया गया है।

पुराणों के पाँच मुख्य लक्षण हैं सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (प्रलय), वंश (देवताओं और ऋषियों की वंशावली), मन्वन्तर (मनु के काल), और वंशानुचरित (सूर्य और चंद्रवंश का इतिहास)।

सर्ग – सृष्टि या ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन।

प्रतिसर्ग – सृष्टि के पुनर्निर्माण और प्रलय का विवरण।

वंश – देवी–देवताओं और ऋषियों की वंशावलियाँ।

मन्वन्तरम् – विभिन्न युगों और उनमें होने वाली घटनाओं का लेखा–जोखा।

वंशानुचरितम् – सूर्य और चंद्र वंश के राजाओं और उनके इतिहास का वर्णन।

महापुराणों की संख्या अठारह मानी गयी है, जिसका ज्ञान एक प्रसिद्ध श्लोक से चलता है–

"**म**–द्वयं **भ**–द्वयं चैव **ब्र**–त्रयं **व**–चतुष्टयम् ।

अ–ना–प–लिं–ग–कू–स्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।"

अर्थात्,

मकरादि दो – मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण

भकारादि दो भविष्य पुराण, भागवत पुराण

ब्र–युक्त तीन ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म पुराण

वकारादि चार – वराह पुराण, वामन पुराण, वायु (शिव) पुराण, विष्णु पुराण। पुराण, पद्म पुराण, लिंग पुराण गरुड़ पुराण, कूर्म पुराण, स्कन्द पुराण अग्नि पुराण, नारद ।

(ख) नीतिशतकम् का परिचय

नीतिशतकम् संस्कृत साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और लोकप्रिय ग्रंथ है, जिसकी रचना भर्तृहरि ने की थी। यह उनकी प्रसिद्ध रचना शतकत्रयम् (तीन शतकों का संग्रह) का एक हिस्सा है, जिसमें अन्य दो ग्रंथ हैं– शृंगारशतकम् और वैराग्यशतकम्। शतक का अर्थ है 'सौ' और इन तीनों में लगभग सौ–सौ श्लोक हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं।

नीतिशतकम् में भर्तृहरि ने मानव जीवन के लिए आवश्यक नीतियों, आदर्शों और नैतिक मूल्यों का वर्णन किया है। इस ग्रंथ में कुल 111 श्लोक हैं, जो काव्य शैली में लिखे गए हैं और इनमें उपदेशात्मक तथा मनोरंजक दोनों प्रकार की बातें मिलती हैं। नीतिशतकम् में कई महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया है–

सज्जन और दुर्जन– इसमें अच्छे (सज्जन) और बुरे (दुर्जन) लोगों के स्वभाव और व्यवहार का अंतर बताया गया है।

विद्या का महत्व– यह ग्रंथ ज्ञान और विद्या की महत्ता पर जोर देता है और बताता है कि कैसे विद्या व्यक्ति को सम्मान और प्रतिष्ठा दिलाती है।

धन की महिमा और दोष– इसमें धन की उपयोगिता और उसके नकारात्मक प्रभावों का वर्णन किया गया है।

दैव और कर्म– भर्तृहरि ने भाग्य (दैव) और कर्म के बीच के संबंध को समझाया है और यह बताया है कि कर्म ही व्यक्ति के जीवन का आधार है।

मानवता के मूल्य– इसमें दया, परोपकार, धैर्य, और ईमानदारी जैसे मानवीय गुणों का महत्त्व बताया गया है।

नीतिशतक की शैली में माधुर्य, पदलालित्य एवं भावप्रवणता है। भाषा भी सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है। इनकी भाषा अत्यन्त स्वाभाविक है, जिसके कारण पद्य को पढकर स्वतः उसका भावार्थ स्पष्ट हो जाता है। छन्दों और अलंकारो का प्रयोग भी सावधानी के साथ किया गया है। छन्दों में शिखरिणी, उपजाति, स्रग्धरा, वसन्ततिलका का प्रयोग बहुलता के साथ है। शार्दूलविक्रीडित इनका सबसे प्रिय छन्द प्रतीत होता है। अलंकारों में उपमा, रूपक, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति और अतिशयोक्ति की प्रचुरता है। भाषागत और काव्यगत विशेषता के अतिरिक्त भर्तृहरि की और अन्य मुख्य विशेषता है–पद्य और वाक्यांश के रूप में सुभाषितों, लोकोक्तियों के द्वारा मानव–जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करना। इन सुभाषितों एवं लोकोक्तियों के माध्यम से कवि ने समाज तक पहुंचने का प्रयत्न किया है, उसमें वह पूर्णतया सफल हुए हैं और यही लोकोक्तियां कवि को वर्तमान में भी प्रासंगिक बनाये रखती है। इनकी लोकोक्तियां मनुष्य जीवन के सर्वांगीण विकास का संकेत देती हैं। व्यावहारिक तथा सांसारिक पक्ष से प्रारम्भ करके आध्यात्मिकता की ओर ले जाने में प्रेरणा प्रदान करती हैं।

(ग) चाणक्यनीति

चाणक्यनीति, जिसे चाणक्य नीतिशास्त्र भी कहा जाता है, एक प्राचीन भारतीय नीति ग्रंथ है। संस्कृत–साहित्य में नीतिपरक ग्रन्थों की कोटि में चाणक्य नीति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी रचना आचार्य चाणक्य ने की थी। आचार्य चाणक्य को कौटिल्य और विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है। आचार्य चाणक्य, चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु, प्रधान अमात्य और मुख्य रणनीतिकार थे। उन्होंने मौर्य साम्राज्य की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

चाणक्यनीति में जीवन को सुखमय एवं सफल बनाने के लिए अनेक उपयोगी सुझाव दिये गये हैं। इसका मुख्य विषय मानव मात्र को जीवन के प्रत्येक पहलू की व्यावहारिक शिक्षा देना है।

चाणक्यनीति की मुख्य बातें–

जीवन के लिए मार्गदर्शन– यह ग्रंथ जीवन को सुखी, सफल और सार्थक बनाने के लिए व्यावहारिक और उपयोगी सुझाव देता है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक संबंध, धन प्रबंधन, और नैतिक मूल्यों पर मार्गदर्शन दिया गया है।

नीति और धर्म– चाणक्यनीति में धर्म, न्याय, शांति, और अच्छी शिक्षा के महत्त्व पर जोर दिया गया है। यह बताता है कि नैतिक व्यवहार और ईमानदारी सफलता और सम्मान के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

नेतृत्व और कूटनीति– इसमें शासक, नेतृत्व और कूटनीति के बारे में भी महत्त्वपूर्ण सिद्धांत दिए गए हैं। चाणक्य ने राजा के कर्तव्यों, राज्य–प्रशासन, युद्ध की रणनीति और साम्राज्य के विस्तार के तरीकों का वर्णन किया है।

ज्ञान और बुद्धिमत्ता– चाणक्यनीति ज्ञान और बुद्धिमत्ता के महत्त्व पर बहुत जोर देती है। यह बताती है कि एक शिक्षित और जानकार व्यक्ति बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होता है।

सरल श्लोक शैली– यह ग्रंथ लघु–लघु श्लोकों में लिखा गया है । इसमें अधिकांश श्लोक अनुष्टुप् छन्द में हैं। इस कारण श्लोकों के अर्थ को समझने में सरलता होती है। ये श्लोक जीवन के गूढ़ सिद्धांतों को सरल और आसानी से समझने योग्य बनाते हैं।

चाणक्य नीति की शिक्षाएँ जितनी पहले उपयोगी थी उतनी ही आज भी प्रासंगिक हैं। वे जीवन की हर स्थिति में सही मार्ग चुनने, ज्ञान प्राप्त करने और जीवन को सफल बनाने के लिए व्यावहारिक सलाह देती हैं

मीमांसा दर्शन का भारतीय संस्कृति और धर्म पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने वैदिक कर्मकांडों को एक तार्किक आधार प्रदान किया है। साथ ही, इसने धर्म, कर्तव्य और कर्मफल की अवधारणा को व्यवस्थित रूप से समझााया। आज भी धार्मिक अनुष्ठानों और वैदिक मान्यताओं के लिए मीमांसा दर्शन का अध्ययन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

वेदांतदर्शन– वेदांतदर्शन, भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इसे 'शारीरिक मीमांसा' और 'उत्तर मीमांसा' भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से उपनिषदों पर आधारित है। 'वेदांत' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– 'वेद' का अर्थ है ज्ञान और 'अंत' का अर्थ है अंतिम भाग। इस प्रकार, वेदांत का शाब्दिक अर्थ है 'वेदों का अंतिम ज्ञान' या 'वेदों का सार'।

वेदांत दर्शन के कई प्रमुख सिद्धांत हैं, जो जीवन और ब्रह्मांड की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

ब्रह्म– वेदांत के अनुसार, ब्रह्म ही एकमात्र परम सत्य है। यह अनंत, शाश्वत और निराकार है। इसे ही सृष्टि का मूल कारण माना जाता है। सभी जीव और वस्तुएँ इसी ब्रहा का हिस्सा हैं।

आत्माः वेदांत में, आत्मा को व्यक्ति के भीतर निवास करने वाला ब्रह्म का अंश माना जाता है। आत्मा अविनाशी और नित्य है। इसका लक्ष्य अज्ञानता के पर्दे को हटाकर ब्रह्मा के साथ अपने वास्तविक संबंध को पहचानना है।

माया: माया को ब्रह्म की शक्ति माना जाता है जो भ्रम पैदा करती है और हमें दुनिया को उसके वास्तविक रूप में देखने से रोकती है। इसी माया के कारण हम स्वयं को शरीर, मन और इन्द्रियों तक सीमित मानते हैं, जबकि हमारा वास्तविक स्वरूप आत्मा है।

मोक्ष: मोक्ष वेदांत का अंतिम लक्ष्य है। यह अवस्था है जब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानती है और माया के बंधन से मुक्त हो जाती है। यह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाता है और आत्मा को ब्रह्म के साथ एकाकार देता है।

वेदांत के सिद्धांतों को समझने और व्याख्या करने के तरीके के आधार पर, इसकी कई उपशाखाएं विकसित हुई हैं:

अद्वैत वेदांत– इसके सबसे प्रमुख प्रतिपादक आदि शंकराचार्य थे। 'अद्वैत' का अर्थ है 'द्वैत नहीं' यानी 'एकता'। यह मानता है कि ब्रह्म और आत्मा एक ही हैं और इनमें कोई अंतर नहीं है।

विशिष्टाद्वैत वेदांत– इसके मुख्य प्रतिपादक रामानुजाचार्य थे।

परिशिष्टम्

(क) **संस्कृते कुटुम्बसंबन्धि–शब्दानां ज्ञानम्**

यथा–
मोहनः– मम पितुः नाम श्रीमान् वसुदेवः। भवतः पितुः नाम किम्?
ज्ञद्धा– मम पितुः नाम श्रीमान् मनोजः अस्ति।
(एवं हि निम्नलिखितानां सम्बन्धवाचिशब्दानाम् अभ्यासः करणीयः)

मम मातुः नाम ....।
मम भ्रातुः नाम ....।
मम भगिन्याः नाम ....।
मम पितामहस्य नाम ....।
मम पितामह्याः नाम ....।
मम मातामहस्य नाम ....।
मम अग्रजस्य नाम.......................।
मम अनुजायाः नाम......................।
मम अग्रजायाः नाम........................।
मम अनुजस्य नाम.........................।
मम मित्रस्य नाम.............................।
मम नगरस्य नाम...............................।
मम विद्यालयस्य नाम.....................।

मम संस्कृत–शिक्षकस्य/शिक्षिकायाः नाम............।

............**इत्यादयः।**

(शिक्षकाः छात्रमाध्यमेन अस्य अभ्यासं कारयिष्यन्ति)

2 शब्दरूपाणां वाक्यप्रयोगः

1. पूर्वस्याम् भानुः उदेति।
2. अहम् भानुम् नमामि।
3. भानुना सह रश्मयः सन्ति।
4. भानवे नमः।
5. पृथ्वी भानोः बहु दूरम् अस्ति।
6. भानोः प्रकाशः सर्वत्र प्रसरति।
7. भानौ तेजः अस्ति।
8. हे भानो! अन्धकारं नाशय।

(इसी प्रकार अन्य शब्दों के वाक्यप्रयोगों का अभ्यास)

3 धातुरूपाणां वाक्यप्रयोगः

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बालःस्मरति	बालौ स्मरतः	बालाः स्मरन्ति
मध्यम पुरुष	त्वम् स्मरसि	युवाम् स्मरथः	यूयम् स्मरथ
उत्तम पुरुष	अहम् स्मरामि	आवाम् स्मरावः	वयम् स्मरामः

2. लृट् लकार (भविष्य काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बालः स्मरिष्यति	बालौ स्मरिष्यतः	बालाः स्मरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	त्वम् स्मरिष्यसि	युवाम् स्मरिष्यथः	यूयम् स्मरिष्यथ
उत्तम पुरुष	अहम् स्मरिष्यामि	आवाम् स्मरिष्यावः	वयम् स्मरिष्यामः

3. लोट् लकार (आज्ञावाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बालः स्मरतु	बालौ स्मरताम्	बालाः स्मरन्तु
मध्यम पुरुष	त्वम् स्मर	युवाम् स्मरतम्	यूयम् स्मरत
उत्तम पुरुष	अहम् स्मराणि	आवाम् स्मराव	वयम् स्मराम

4. लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बालः अस्मरत्	बालौ अस्मरताम्	बालाः अस्मरन्
मध्यम पुरुष	त्वम् अस्मरः	युवाम् अस्मरतम्	यूयम् अस्मरत
उत्तम पुरुष	अहम् अस्मरम्	आवाम् अस्मराव	वयम् अस्मराम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बालः स्मरेत्	बालौ स्मरेताम्	बालाः स्मरेयुः
मध्यम पुरुष	त्वम् स्मरेः	युवाम् स्मरेतम्	यूयम् स्मरेत
उत्तम पुरुष	अहम् स्मरेयम्	आवाम् स्मरेव	वयम् स्मरेम

(इसी प्रकार अन्य धातुओं के क्रियारूपों के वाक्यप्रयोगों का अभ्यास)